धरोहर

भाग- 8

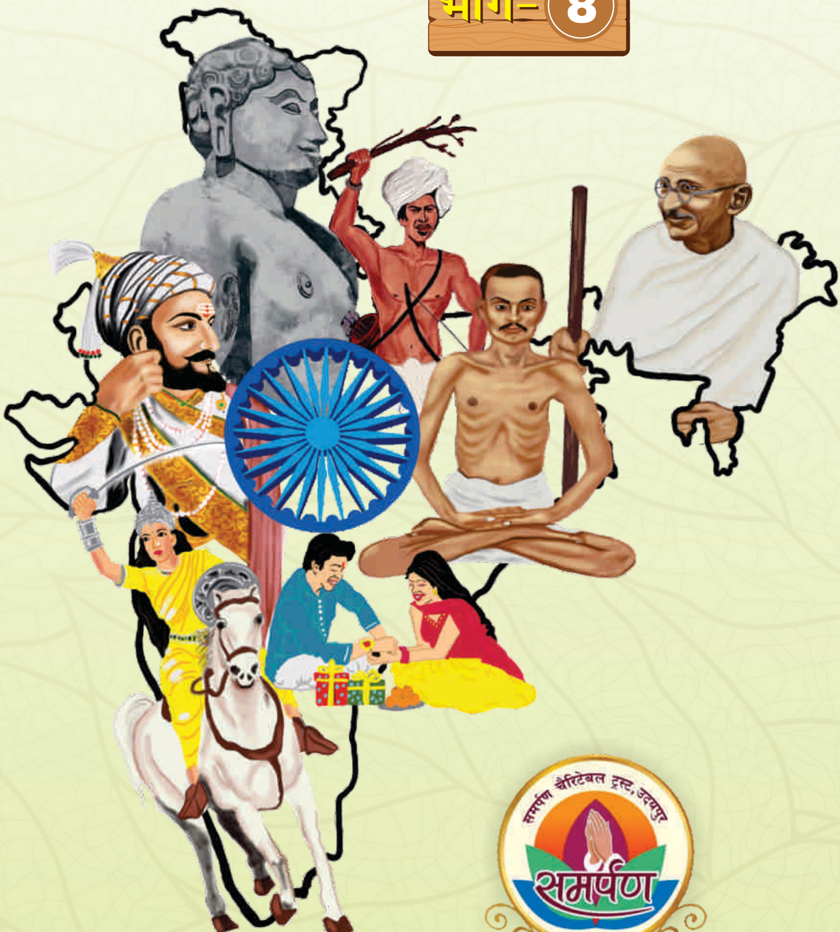

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

समर्पण

स्कूल जाते समय रखें सावधानियाँ

1. पानी की बोतल में ताजा पानी छानकर भरें और बोतल में लोंग या थोड़ी सी सौंफ डाल लें, जिससे आपका पानी 6 घंटे तक अनछना नहीं होगा।
2. स्कूल में अपने टिफिन का ही भोजन करें, हर किसी अपरिचित का भोजन न करें। हो सकता है कि उसके टिफिन में न खाने योग्य अभक्ष्य-अमर्यादित पदार्थ हों।
3. आप अच्छे और संस्कारित बच्चों को दोस्त बनायें जिससे आपकी सोच का और आपका विकास होगा।
4. स्कूल के गार्डन में अथवा रास्ते में लगे हुए पौधों अथवा फूलों को नुकसान न पहुँचायें, न ही उन्हें तोड़ें। यह हिंसा का पाप है।
5. स्कूल की किसी भी चीज को अपने अध्यापक से बिना पूछे न लायें और न ही किसी छात्र की कोई वस्तु को लायें।
6. विद्यालय में मन लगाकर पढ़ें। अध्यापक की प्रत्येक बात को ध्यान से सुनें।
7. विद्यालय से लौटकर अपने कपड़े, जूते-मोजे, टाई, आई कॉर्ड, स्कूल बैग सही स्थान पर रखें।
8. मोजे जूते से बाहर रखें। जूते के अंदर रखने से उनमें बदबू आने लगती है।
9. अपना होमवर्क उसी दिन पूरा करने का प्रयास करें ताकि स्कूल में मिलने वाले दण्ड से आप बच सकें।
10. अपनी पढ़ाई के बारे में तथा स्कूल में कोई भी खास बात हुई हो या कोई घटना हुई हो तो अपनी मम्मी को अवश्य बतायें।

सर्वोदय ग्रन्थमाला पुष्प-4

धरोहर

भाग-४

(गौरवशाली नैतिक-अहिंसक मानव मूल्यों, पर्वों, तीर्थों तथा इतिहास की बोधक)

संकलन/संपादन

राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

प्रकाशक

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ
[चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम संवत् 2080 (नववर्ष प्रारंभ)
22 मार्च 2023]

प्राप्ति स्थान : 18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर,
यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राज.)
मो. 91-9414103492

मूल्य : 75/-

प्यारे बच्चो! अच्छी पुस्तकें ज्ञान प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन हैं, सच्ची मित्र हैं। पुस्तकों से गुण-दोष, अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है, जिससे शान्तिमय जीवन का निर्माण होता है इसलिए पुस्तकों को खराब न करें, फाड़ें नहीं, अपमान न करें।

मुद्रक : देशना कम्प्यूटर्स
82, पॉल्टी फार्म, आगरा रोड, जयपुर
मो. 9928517346

पुस्तक के संबंध में...

वर्तमान समय में भौतिक संसाधनों की वृद्धि आश्चर्यजनक रूप से हो रही है, साथ ही शिक्षा-चिकित्सा-व्यवसाय इत्यादि क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, जिससे सर्वत्र आर्थिक समृद्धि भी दिखाई दे रही है; फिर भी यदि गम्भीरता से देखा जाए तो जहाँ शिक्षा और अर्थ जगत में उत्साहवर्धक उन्नति हुई है वहीं मानवीय मूल्यों और नैतिकता में बहुत ही ह्रास हो रहा है। हम अपनी संस्कृति को भुलाते जा रहे हैं। विद्यार्थी कैसे भी अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके, अच्छे पैकेज वाला 'जॉब' करके कैसे भी धन अर्जित कर उसे भोग विलास में लगाकर अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे हैं।

हमारे देश की संस्कृति या विरासत अन्य-अन्य माध्यमों से छात्रों तक पहुँचाई जाती रही है फिर भी अनेक व्यक्तित्व, पर्व ऐसे हैं जिनके बारे में भारत देश की अधिकांश जनसंख्या अपरिचित है, ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग हैं, जो हमारे लिए दिशा बोध देते हैं इन सभी का ज्ञान कराने की भावना से हमने यह 'धरोहर' पुस्तक तैयार की है।

अध्यापकों से निवेदन है कि विश्व गुरु के रूप में प्रसिद्ध महान् भारत देश की नैतिक, अहिंसक, संस्कृति एवं गौरवशाली इतिहास की झलक दिखलाने वाली इस पुस्तक का उत्साहपूर्वक अध्यापन कर अपनी 'धरोहर' को बच्चों तक पहुँचाने में अपना सहयोग करें।

छात्रों से भी अनुरोध है कि जिन विषयों के अंक, अंक सूची में अंकित होते हैं, जिनके आधार से नौकरी मिलती है वे ही विषय काम के हैं – ऐसा विचार त्याग कर 'जो हमारे विचार और आचरण को प्रभावित करे, जो हमारे जीवन का निर्माण करे' – ऐसी पुस्तक को भी अपने जीवन में उत्साह पूर्वक अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

सुभाषितकार ने कहा है –

राष्ट्रं समाजतः सिद्ध्येत्, समाजो व्यक्तिभिस्तथा।

व्यक्तिश्चरित्रतः सिद्ध्येत्, चरित्रं तूच्चशिक्षया।।

राष्ट्र का निर्माण समाज से होता है, समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है, व्यक्ति का निर्माण चरित्र से होता है और चरित्र का निर्माण उच्च और श्रेष्ठ शिक्षा से होता है।

बालकों के चरित्र निर्माण की दिशा में यह पुस्तक एक छोटा-सा कदम है जो सही दिशा की ओर ले जाएगा। आपके जीवन को उत्साह व प्रसन्नता से परिपूर्ण करने के लिए यह पुस्तक आपके हाथों में है।

जिन लेखकों/कवियों की सामग्री पुस्तक में सम्मिलित की गई है उन सभी के प्रति हम आभारी हैं।

आशा है विद्यालय संचालकों/अध्यापकों और छात्रों के उत्साह/सहयोग से हमारा यह प्रयास सार्थक होगा।

डॉ. अरविन्द जैन
संयोजक

राजकुमार शास्त्री
संपादक

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रार्थना	7
2.	प्रेरक प्रसंग –	9
	■ अहिंसा का प्रभाव	9
	■ चरित्र बल की पराकाष्ठा	10
	■ साहसी कौन है?	11
	■ आशा शाह की जननी	12
	■ मैं चेतन हूँ, तन धन जड़ हैं	13
3.	हमारे गौरवशाली महापुरुष –	16
	■ निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी	16
	■ सदाचार का प्रभाव	17
4.	जरा याद इन्हें भी कर लो	19
	■ अमर शहीद मोतीचन्द शाह	19
	■ शहीद गुलाब सिंह	21
5.	एकांकी –	24
	■ सन्मति वन	24
	■ जाल	30
6.	हमारे पर्व –	33
	■ रक्षाबंधन पर्व	33
	■ दशलक्षण पर्व	35
7.	हमारे तीर्थ : श्रवणबेलगोला	37
8.	कविताएँ –	39
	■ कम्प्यूटर पर चिड़िया	39
	■ युक्ति से होती मुक्ति	40
	■ चिदानंद रस पीना सीखो	41
9.	सदाचार –	43
	■ पाँच पाप का फल	43
10.	जीवन निहारें–जीवन निखारें	48
	■ छोड़ो हताशा/निराशा–रखो सफलता की आशा	48
11.	शिक्षाप्रद कहानी –	56
	■ अपशकुन	56
12.	सुभाषित : ज्ञान और ज्ञान का फल	59

लक्ष्य उसे ही मिलता है

बिना रुके अरु बिना थके जो, नित प्रति बढ़ता रहता है।
भले दूर हो लक्ष्य मगर, चलने वाले को मिलता है।।

आलस सबसे बड़ा शत्रु है, मित्र! इसे ना अपनाना।
अहंकार भी रिपु ही समझो, नहीं पास इसके जाना।।
तज कर आलस गर्व भाव जो, धीरे-धीरे चलता है।। 1।।

शक्ति निज पहचानो पहले, फिर तुम अपना कदम बढ़ाना।
देखा-देखी और दिखावे के चक्कर ना पड़ जाना।।
निज शक्ति अनुसार चले जो, लक्ष्य उसे ही मिलता है।। 2।।

असफलता से न घबराना, बाधाओं से जा टकराना।
हिम्मत-होश हमेशा रखना, न अनीति पथ पर जाना।।
न्याय-नीति पर जो चलता है, सुख उसको ही मिलता है।। 3।।

पद-पैसा सब मिले भाग्य से, बात नहीं यह बिसराना।
फिर भी नित पुरुषार्थ करो अरु, अहंभाव न मन लाना।।
न हताश न हो निराश जो, लक्ष्य उसी को मिलता है।। 4।।

धन-पद-यश न मात्र लक्ष्य हो, लक्ष्य हो निज पर हित करना।
ज्ञानदीप द्योतित कर अंतर, जग का मोह तिमिर हरना।।
मिथ्यातिमिर मिटाता वह जो, ज्ञानदीप बन जलता है।। 5।।

1 प्रार्थना

मुझे है स्वामी! उस बल की दरकार।
जिस बल को पाकर के स्वामी, आप हुये भवपार।।टेक।।

अड़ी खड़ी हों अमिट अड़चनें, आड़ी अटल अपार।
तो भी कभी निराश निगोड़ी, फटक न पावे द्वार।। 1।।

सारा ही संसार करे यदि, मुझसे दुर्व्यवहार।
हटे न मेरी सत्य मार्ग से, श्रद्धा किसी प्रकार।। 2।।

धन वैभव की जिस आँधी से, अस्थिर सब संसार।
उससे भी न जरा डिग पाऊँ, मन बन जाये पहार।। 3।।

असफलता की चोटों से नहिं, मन में पड़े दरार।
अधिक-अधिक उत्साहित होऊँ, मानूँ कभी न हार।। 4।।

दुःख दरिद्रता रोगादिक से, तन होवे बेकार।
तो भी कभी निरुद्यम हो नहीं, बैठूँ जगदाधार।। 5।।

देवांगना खड़ी हों सन्मुख, करती अंग विकार।
सेठ सुदर्शन सा होऊँ मैं, लगे नहीं अतिचार।। 6।।

जिसके आगे तनबल धनबल, तृणवत् तुच्छ असार।
पाऊँ प्रभु आत्मबल ऐसा, महामहिम सुखकार।। 7।।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1. रोगादिक से .... बेकार होता है।
2. मेरी श्रद्धा .... से नहीं हटना चाहिए।
3. तनबल, धनबल, सभी .... के आगे तुच्छ हैं।
4. दु:ख दरिद्रता रोगादिक से तन .... हो जाता है।
5. अतिचार से बचने के लिए मैं .... के जैसा होऊँ।

प्रश्न 2 – संक्षिप्त में उत्तर दीजिए –

1. किस मार्ग से हमारी श्रद्धा न हटे?
2. असफलता की चोटों से मन में क्या न पड़े?
3. किस बल को पाकर भगवान भव पार हुए हैं?
4. सारा संसार किससे अस्थिर है?

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

हमें भगवान से क्या माँगना चाहिए, क्या नहीं इस पर विचार कीजिए और अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए।

2 प्रेरक प्रसंग

अहिंसा का प्रभाव

जयपुर के तत्कालीन दीवान अमरचन्द अपनी कर्तव्य निष्ठा, साहस और ईमानदारी के लिए सर्वविख्यात थे। वे निष्ठावान श्रावक होने के कारण अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे व्रतों और क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य एवं ब्रह्मचर्य जैसे आत्मीय धर्मों के प्रति पूर्ण समर्पित थे राजसभा के अन्य सामन्तों को उनसे बड़ी ईर्ष्या थी। ईर्ष्यालु लोग सदैव दीवान अमरचन्दजी को नीचा दिखाने का अवसर तलाशते रहते थे।

महाराजा जयपुर के यहाँ एक शेर पाला हुआ था। उसे भोजन देने के समय कोई न कोई उच्च राज्याधिकारी उपस्थित रहता था। शेर मांसभक्षी होता है, अतः पूर्ण शाकाहारी दीवानजी इस कार्यक्रम में कभी उपस्थित नहीं हुए थे। मांसाहारी सरदारों को एक मौका मिला और उन्होंने शेर को भोजन देने के लिए अमरचन्दजी का नाम यह कहकर सुझाया कि ''देखें वे शेर को कैसे भोजन देते हैं?'' कौतुकवश महाराज ने दीवानजी को आदेश दिया – 'शेर को भोजन देने कल आप जायें।'

राजाज्ञा मानकर दीवानजी ने एक हलवाई से बड़ा टोकरा भर कर जलेबी मँगवाई और शेर के पिंजरे को खुलवा कर, स्वयं टोकरा उठाकर भीतर घुसे। बड़ी गंभीर वाणी में उन्होंने शेर से कहा – ''वनराज! मांस आपका भोजन है और मांसाहारी स्वभाव भी है, परन्तु मैं अहिंसक जैन श्रावक हूँ। जो भोजन लाया हूँ, वह भी शाकाहारी है, आप इसे खावें! और यदि इसे नहीं खाते तो मैं किसी पशु को मारकर तो खिला नहीं सकता। हाँ, स्वयं प्रस्तुत हूँ, आप मुझे खा लें!'' यह कह कर वे शेर के पास बैठ गये।

शेर अमरचंदजी के शब्द समझा या नहीं, परन्तु भाव अच्छी तरह समझगया। उसने टोकरे से जलेबियाँ खानी शुरू कर दीं। दर्शक चकित रह गये। दीवान अमरचंदजी की जय-जयकार सुनकर ईर्ष्यालु सामन्तों के मुँह काले पड़ गये।

शिक्षा - नियम संयम का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाले तथा पवित्र भाव वाले जीव सामने वाले को भी अपने अनुकूल बना लेते हैं।

चरित्र बल की पराकाष्ठा

एक बार शिवाजी महाराज के एक सेनापति ने रण में विजय प्राप्त करने के पश्चात् एक यवन कन्या को अपने साथ ले आये, ताकि वह उसे शिवाजी महाराज को एक अनुपम भेंट देकर प्रसन्न कर सकें। वह शिवाजी महाराज के सम्मुख उपस्थित हुआ और बोला - "महाराज! हमने किला जीतकर यवनों को भगा दिया है।"

"तुम वीर हो, तुमसे ऐसी ही अपेक्षा थी।" शिवाजी बोले।

"महाराज! इस विजय की खुशी में हम आपके लिए उपहार लाये हैं।" सेनापति बोला।

"कैसा उपहार सेनापति?"

"महाराज! यह है उपहार।" यवन कन्या को उपस्थित करते हुए सेनापति बोला।

प्रखर बुद्धि शिवाजी महाराज उसकी कुचेष्टा को भाँप गये और तेवर बदलते हुए सेनापति से बोले - "अगर तूने रण में विजय प्राप्त नहीं की होती तो आज मैं तुम्हारी कुचेष्टा के कारण कठोर दंड देता। मेरी आँखों के सामने से हट जाओ। मुझे तुमसे ऐसी अपेक्षा न थी।"

दूसरे सेनापति को आदेश दिया कि यवन युवती को श्रृंगार कर महल में ले आओ। आदेशानुसार सेनापति ने वैसा किया। युवती भय के कारण थरथरा रही

थी। शिवाजी महाराज कुछ समय तक उसकी ओर निहारते रहे, फिर युवती से बोले – "देवी, काश मेरी माताजी इतनी सुन्दर होती तो मैं भी इतना सुन्दर होता। यवन बाला डरो मत, तुम मेरी माता के समान हो। मेरी दृष्टि में प्रत्येक नारी नैसर्गिक रूप से माँ है, फिर मेरे देश की संस्कृति पराभूत को विवश नहीं करती।"

शिवाजी महाराज ने उस यवन बाला को उचित भेंट देकर ससम्मान उसके स्वजनों के पास पहुँचा दिया। ऐसे सर्वोत्तम उदाहरण केवल भारतीयों में मिलते हैं।

शिक्षा – जीवन में चरित्र-बल ही सबसे बड़ा बल है। चरित्र की उज्ज्वलता से ही व्यक्ति महान बनता है।

साहसी कौन है

उस ऑफिस में केवल वही एक ऐसा था, जिसे घूस लेने से सख्त नफरत थी। वह अपने को चाहे जो कह ले, लेकिन सब उसे मूर्ख ही समझते थे। उसके घर वाले भी उसके इस व्यवहार पर उसे खूब कोसते रहते फिर भी उस पर कोई असर नहीं पड़ता। उसे किसी की परवाह भी नहीं थी।

"शायद तुम डरपोक हो?" किसी सहकर्मी ने एक दिन उसे छेड़ा।

"नहीं तो।"

"फिर घूस क्यों नहीं लेते हो?"

"क्यों लूँ?"

"सब जो लेते हैं।"

"वे डरपोक हैं।"

"और तुम?"

"मैं साहसी हूँ।"

"वह कैसे?" उसे आश्चर्य हुआ।

"सरकार हमें जो वेतन देती है, वह जीने के लिए यदि काफी नहीं है तो कम भी नहीं है। फिर उस कमाई पर जो जीने का हौंसला नहीं रखता हो, उसे डरपोक ही समझिये और साहसी वही है, जो अपनी सच्चाई की कमाई पर जी लेता है। किसी भी परिस्थिति में उस राह को नहीं छोड़ता।" उसने अपना तर्क दिया।

डरपोक और साहसी की नई परिभाषा सुनकर उसके सहकर्मी की विचारधारा ही बिलकुल बदल गई। अब तक जिसे वह डरपोक और मूर्ख समझता आ रहा था, आज पहली बार वह उसकी नजर में साहसी और समझदार जान पड़ा।

शिक्षा – वास्तव में सत्य और ईमानदारी की राह पर चलने वाला ही सच्चा साहसी है।

आशा शाह की जननी

मेवाड़ के राजा रत्नसिंह की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा। वह राजा बनने के योग्य नहीं था। उसका छोटा भाई उदयसिंह नन्हा बालक था। स्वामीभक्त पन्नाधाय ने उसका पुत्रवत् पालन किया था। यहाँ तक कि उदयसिंह के पीछे अपने सुपुत्र की वनवीर से हत्या करा ली थी और उदयसिंह को लेकर जगह-जगह भटकती फिरी पर किसी ने भी वनवीर के भय के मारे शरण नहीं दी, अन्ततः वह भटकती हुई कुम्भलमेर जा पहुँची।

कुम्भलमेर का दुर्गपाल आशा शाह देपुरा जैनी था। जब पन्नाधाय नन्हें उदयसिंह को लेकर आशा शाह की शरण में पहुँची तो आशा शाह भी आनाकानी करने लगा। सहसा उसकी माता जो परम जिनभक्त थी वहाँ

आ पहुँची और पुत्र को उसकी कायरता पर बुरी तरह धिक्कारा। आशा शाह माता के चरणों में पड़कर क्षमा–याचना करने लगा। उसने नन्हें उदयसिंह को अपनी शरण में रखा और उसे अपना भतीजा घोषित कर प्रसिद्ध कर दिया। कुछ काल बाद जब उदयसिंह वयस्क हो गया तो अन्य सामन्तों और राजाओं के सहयोग से उदयसिंह को चित्तौड़ के सिंहासन पर बिठा दिया। इस तरह इन वीरमाता ने राजवंश की रक्षा कर मेवाड़ राज्य का प्रशंसनीय उपकार किया था।

मैं चेतन हूँ, तन धन जड़ हैं

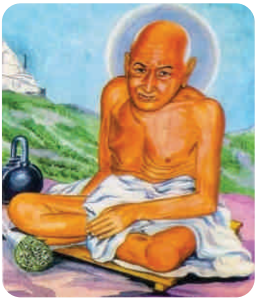

गणेश प्रसादजी वर्णी ज्ञानी व विद्वान् तो थे ही, उनकी सहृदयता भी अनोखी थी। एक बार वे ब्र. कमलापति बरायठा वालों के साथ कर्रापुर से सागर जा रहे थे। चूँकि यात्रा पैदल ही कर रहे थे, इसलिए रास्ते में प्यास लगने पर पास ही बहेरिया ग्राम के कुएँ पर पानी पीने लगे। इतने में पाँच वर्ष के बालक के साथ एक महिला आकर खड़ी हो गई। वह बालक प्यासा था, उसे पानी पिला कर वर्णीजी ने उसे खाने के लिए अपने पास रखी हुई किशमिश दे दी।

जैसे ही वे चलने लगे तो वह महिला रोने लगी। वर्णीजी द्वारा रोने का कारण पूछने पर उसने अपनी दुखद स्थिति बताई कि "मेरा पति आठ माह पूर्व गुजर चुका है, मेरा देवर मुझसे लड़ता है, अंत में आश्रय की तलाश में मैं अपने माता–पिता के पास जा रही हूँ, किन्तु वहाँ भी आश्रय न मिला तो मैं दर–दर की भिखारिन हो जाऊँगी।"

यह सुनकर वर्णीजी का हृदय द्रवित हो उठा। धर्मी जीव को दया, करुणा आदि आती है, उनके प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य भाव सहज प्रगट होते हैं।

वर्णीजी के पास उस समय कुछ रुपयों और धोती-दुपट्टा के सिवाय कुछ न था। उन्होंने अपना धोती-दुपट्टा और सब रुपये उस महिला को दे दिये, अब केवल लंगोटी ही उनके पास रह गई थी।

ब्र. कमलापतिजी ने कहा – "ऐसी हालत में नगर में कैसे जायेंगे?"

वर्णीजी ने कहा कि "चिन्ता की बात नहीं, रास्ते में ही सामायिक करेंगे और रात्रि में सागर पहुँच जायेंगे, वहाँ जाकर कपड़े पहन लेंगे। किसी को कुछ भी खबर नहीं पड़ेगी।" शाम को जब सागर पहुँचे तो बाईजी (चिरोंजा बाईजी जो उनकी धर्ममाता थीं) मंदिर जा रही थीं। वर्णीजी को सर्दी में इस अवस्था में देखकर बोलीं – "यह क्या हालत बना रखी है? सारे कपड़े कहाँ चले गये?" वर्णीजी तो कुछ नहीं बोले, ब्र. कमलापतिजी ने सारी घटना सुना दी।

घटना सुनकर बाईजी ने कहा – "भाई! इसका तो यही हाल है कि किसी को भी दुःखी देख कर द्रवित हो उठता है और अपने पास जो कुछ होता है, सब कुछ दे डालता है। इसका जीवन तो देने के लिए ही बना है।"

यह सुनकर वर्णीजी बोल उठे – "बाईजी! मैंने अपना क्या दिया है उसको? अपना ज्ञान-दर्शन दिया होता तो कहा जा सकता था कि मैंने अपना कुछ दिया है। धन-कपड़ा आदि वस्तुएँ तो न अपनी थीं, न हैं और न ही होंगी –

मैं चेतन हूँ, तन धन जड़ हैं, इनसे मेरा क्या नाता?
इनको दे जो दानी बनता, वह जड़पति ही कहलाता।

अहो! ज्ञानी महापुरुषों की सहजता, दया-दान के परिणामों को करते हुए भी उनसे निर्लिप्त रहते हैं।

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले अनादि यतन तैं बिछुड़े, ज्यों पय अरु पानी।।
रूप तुम्हारा सबसौं न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जोलौं पौरुष थके न तोलौं, उद्यम सो चरना।।"

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – नीचे दिए वाक्यों में सत्य-असत्य लिखिए –

1. मांसाहारी प्राणी अहिंसा का पुजारी है।
2. शिवाजी महाराज युवती से बोले तुम मेरी माता के समान नहीं हो।
3. ईमानदारी की राह पर चलने वाला साहसी है।
4. मेवाड़ के राजा रत्नसिंह की मृत्यु के बाद विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा।
5. प्यास लगने पर बहेरिया ग्राम के कुएँ पर वर्णीजी पानी पीने लगे।

प्रश्न 2 – निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. दीवान अमरचन्दजी से ईर्ष्या कौन रखते थे?
2. शिवाजी महाराज ने यवन बाला को कहाँ पहुँचा दिया?
3. रिश्वत न लेने वाला साहसी था, कैसे?
4. किसके सहयोग से उदयसिंह को चित्तौड़ का राजा बना दिया गया?
5. वर्णीजी की धर्ममाता का क्या नाम था?

प्रश्न 3 – सही जोड़ी बनाओ –

1.	उदयसिंह	क.	सागर
2.	वर्णीजी	ख.	चरित्र बल
3.	ईमानदारी	ग.	पन्नाधाय
4.	मांसभक्षी	घ.	शेर
5.	सबसे बड़ा बल	ङ.	रिश्वत न लेना

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

क्या आपने वर्णीजी की आत्मकथा 'मेरी जीवन गाथा' पढ़ी है? यदि नहीं तो अपने पुस्तकालय से लेकर पढ़ें और अन्य मित्रों को भी पढ़ने हेतु प्रेरित करें।

3 हमारे गौरवशाली महापुरुष

निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी

कविवर पण्डित भागचन्द बहुत प्रसिद्ध कवि थे और उनके द्वारा रचित भजन-भक्ति सभी जिनमंदिरों में लोकप्रिय थीं। पर वे बहुत गरीब थे। धन कमाने के लिए उन्होंने अपना गाँव छोड़ दिया और दूसरे नगर पहुँच गये। रास्ते में एक जिनमंदिर में पूजन-विधान चल रहा था तो वे वहीं बैठ गये और अत्यंत भक्तिभाव से पूजन की और स्वाध्याय के बाद स्वयं के द्वारा रचित स्तुति गाई। वह पद और सुन्दर स्वर सुनकर लोग वाह-वाह करने लगे। तभी एक श्रोता ने पण्डितजी से कहा – ''यह पद तो पण्डित भागचन्दजी का है। आप उन्हें कैसे जानते हैं?'' तब पण्डितजी ने कहा कि ''मैं ही पण्डित भागचन्द हूँ।''

यह सुनकर और उनके पुराने से कपड़े देखकर सभी को बड़ा दु:ख हुआ और उनसे आग्रह किया कि ''आप हमारे नगर में ही रुक जाइये और हम सबको धर्म चर्चा सुनाइये, आपकी सारी जिम्मेदारी हमारी होगी।'' तो पण्डितजी बोले – ''भाई! धन के लिए प्रवचन करना मुझे शोभा नहीं देता।'' तब लोगों ने आग्रह करके धन उधार देकर उनकी एक दुकान खुलवा दी।

कुछ माह बाद जब पण्डितजी की दुकान का सारा काम व्यवस्थित हो गया तो उन्होंने उन साधर्मी का धन वापस करना चाहा तो वे साधर्मी बोले ''पण्डितजी! यह दुकान तो आपकी ही है, ये देखिये इस दुकान के सारे पेपर आपके नाम पर ही हैं।'' जब पण्डितजी ने इसे लेने से मना कर दिया तो वे साधर्मी बोले कि ''पण्डितजी! सर्वज्ञ भगवान की वाणी को सुनाने वाले हमें आप जैसे महाविद्वान मिले, यह हमारा सौभाग्य है तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम आपको थोड़ा सा सहयोग करें। हमारी विनय स्वीकार कीजिए।''

धन्य हैं ऐसे निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी।

सदाचार का प्रभाव

छत्रसाल सदाचारी सत्यनिष्ठ एवं सहृदय प्रजा-वत्सल राजा थे। वे प्रायः प्रजा के सुख-दुःख को देखने के लिए कभी-कभी रूप परिवर्तित करके घूमते थे। संकटों में फँसे हुए दुःखी एवं आपत्तिग्रस्त व्यक्तियों के दुःख दूर करने के लिए देखभाल करते थे और उन्हें हर तरह की सहायता देकर संकटों से उबारने का प्रयत्न करते थे। गौर-वर्ण, बड़े-बड़े नेत्र, चौड़ा ललाट, दीर्घ बाहु, विशाल वक्षःस्थल, सुन्दर दिव्य, सुसंगठित, मझौला उनका शरीर था। उनके शरीर-सौन्दर्य पर एक स्त्री मोहित हो गई।

एक दिन जब उस महिला ने उन्हें अपने दरवाजे के सामने से आते हुए देखा तो सामने आकर कहने लगी – "मैं बहुत दुखिया हूँ।"

महाराज ने सहजता से पूछा – "आपको क्या दुःख है देवीजी!" महाराज की दृष्टि नीचे थी। शांत नयन, सात्त्विक और गम्भीर चेहरा था। उस नारी को छल करना था। कपटपूर्ण भौंहों को टेढ़ी करती हुई, इठलाती हुई बोली "श्रीमान्! मेरा दुख दूर करना है तो पहले मुझे वचन दो। आपके बिना वह दुख दूर नहीं हो सकता। मैं आपसे वचन लेना चाहूती हूँ। दोगे न?"

"सम्भव हुआ तो तुम्हारा दुख अवश्य दूर करूँगा।" महाराज ने कहा।

सहज चंचलता द्वारा अपने आँख की भौंहें टेढ़ी करती हुई एवं कुचेष्टा करती हुई वह बोली – "मुझे सन्तान नहीं है। पुत्रोत्पत्ति में मेरे पति असमर्थ हैं। मैं आप जैसे पुत्र की कामना करती हूँ। वह आपसे ही संभव हो सकता है। मैं आपको अपना शरीर तक सौंपने को तैयार हूँ।" वह निर्लज्जतापूर्वक बोल रही थी। उसकी विकार भावना स्पष्ट नजर आ रही थी।

महाराज छत्रसाल क्षण भर के लिए स्तब्ध होकर असमंजस में पड़ गये – किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये, किन्तु शीघ्र संभल गये। हाथ जोड़ कर बोले कि "आपको मेरे समान ही पुत्र चाहिए न? हे माता! आज से यह छत्रसाल आपका पुत्र है।" उस देवी के चरणों में गिरते हुए उन्होंने कहा। उस स्त्री की दूषित भावना भाग गई। विकार की जगह पवित्रता आ गई। उस दिन से उस स्त्री का वे राजमाता के समान सम्मान करते थे।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाओ –

1.	स्वाध्याय	क.	पं. भागचन्दजी
2.	छत्रसाल	ख.	श्रेष्ठी
3.	प्रजावत्सल	ग.	जिनवाणी
4.	निर्लोभी	घ.	छत्रसाल
5.	उदार	ङ.	सदाचारी

प्रश्न 2 – निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. पं. भागचन्द्रजी ने अपना गाँव क्यों छोड़ दिया?
2. पं. भागचन्द्रजी की भजन-भक्ति कहाँ लोकप्रिय थी?
3. महाराज छत्रसाल कैसे राजा थे?
4. स्त्री की दूषित भावना कैसे भागी?
5. स्त्री महाराज छत्रसाल से कैसे पुत्र की कामना कर रही थी?

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

क्या आपको पता है लोभ करने से क्या नुकसान होते हैं? आपस में चर्चा कीजिए।

4 जरा याद इन्हें भी कर लो...

अमर शहीद मोतीचन्द शाह

अमर शहीद मोतीचन्द शाहजी का जन्म 1880 में सोलापुर जिले के करकल ग्राम में संतोष वृत्ति व दयालु अंत:करण के धनी तथा न्याय से आजीविका कमाने वाले सेठ पदमसी के यहाँ हुआ।

अल्पायु में ही पिता का वियोग होने से मराठी की चौथी कक्षा तक अध्ययन करने के बाद पेट भरने के लिए मजदूरी करने लगे, परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ज्ञान पिपासु मोतीचन्दजी अध्ययन करते रहे। व्यायाम करना, तैरना, लाठी चलाना आदि के साथ-साथ देशभक्तों के चरित्रों को पढ़ने की उन्हें विशेष रुचि थी। देश की क्रांति से संबंधित अपने मित्र देवचन्दजी के साथ वे लोकमान्य तिलक द्वारा प्रारम्भ किये गये 'स्वदेशी आंदोलन' में जाते थे, जिसके अंतर्गत सभाओं में स्वतंत्र भारत की घोषणा व 'वंदे मातरम्' का जयघोष होता है।

उन्होंने अनेक स्थानों पर 'बालकोत्तेजक समाज' की स्थापना की। वे विद्यार्थियों के बीच देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं के बारे में बताते तथा विदेशी वस्त्रों का प्रयोग नहीं करना, विदेशी शक्कर नहीं खाना आदि प्रतिज्ञायें कराया करते थे।

जैनकुल में जन्म होने के कारण भोगों के प्रति उनकी विरक्ति स्वाभाविक ही थी। जीवन की साधना के बीच 'ब्रह्मचर्य ही उत्तम साधना है' - इस विचार पूर्वक उन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया।

'दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभा' सांगली अधिवेशन में पंडित अर्जुन लाल सेठी के सम्मान व राष्ट्रसेवा की भावनापूर्ण व्याख्यान से प्रभावित होकर वे जयपुर में उनके विद्यालय में पढ़ने हेतु पहुँच गए तथा बाद में क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गए।

एक बार जेल में दशलक्षण पर्व में दस उपवासों का कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि ये धार्मिक व्रत उस कठोर जीवन के लिए तैयारी ही हैं, जो राष्ट्रीय सेवक के लिए आवश्यक है। जैनधर्म में जो बाईस परीषह (भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, निन्दा-प्रशंसा आदि बाईस परिस्थितियों को समता से सहना) बताए गए हैं, उन सभी को सानन्द सहने वाला और राष्ट्र को आजाद करने के काम में लगे रहने वाला ही सच्चा राष्ट्र सेवक, सच्चा साधु व सच्चा त्यागी है।

पुलिस को जयपुर के विद्यालय में संगठित क्रांतिकारी दल की खबर मिली जिससे उनको गिरफ्तार करके कोर्ट में फाँसी की सजा सुना दी गई।

जेल में अपने अंतिम दिनों में उन्होंने रक्त से एक पत्र अपने मित्रों के नाम लिखा था। उनकी अंतिम इच्छा थी कि उन्हें फाँसी से पूर्व जैन प्रतिमा के दर्शन कराए जाएँ तथा दिगम्बर (नग्न) अवस्था में फाँसी दी जाए। जेल के नियमों के प्रतिकूल होने के कारण यह संभव नहीं हुआ, परन्तु उनके एक साथी ने प्रातः 4 बजे से पूर्व ही भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति के दर्शन करा दिए थे। उन्होंने सामायिक, तत्त्वार्थसूत्र तथा समाधिमरण का पाठ भी किया/सुना था।

फाँसी की रस्सी को उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया। मृत्यु के समय तक बलिदान की खुशी में उनका वजन कुछ बढ़ गया था।

अपने इस वफादार शिष्य की मृत्यु पर सेठीजी को बहुत सदमा पहुँचा और उनकी स्मृति में सेठीजी ने अपनी कन्या का विवाह महाराष्ट्र के युवक से इस भावना से कर दिया कि 'मैंने जिस प्रान्त का सपूत देश को बलि चढ़ाया है, उस प्रान्त को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। सम्भव है उससे भी कोई मोती जैसा पुत्र रत्न उत्पन्न होकर देश पर न्यौछावर हो सके।'

शहीद गुलाब सिंह

मध्यप्रदेश के पहले शहीद थे गुलाब सिंह, 16 साल की उम्र में आजादी के लिए जान दे दी थी।

200 सालों की गुलामी की जंजीरों को तोड़कर ये आजादी हमें खून की नदियाँ बहाने के बाद मिली हैं। अपने वतन पर अपना तिरंगा लहराने के लिए हमने न जाने कितने शीश कटाए हैं। मध्यप्रदेश के ऐसे कई वीर हैं, जिनका स्वप्न था आजाद भारत देखना और इस स्वप्न को साकार करने के लिए उन वीरों ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। जबलपुर के गुलाब सिंह पटेल का नाम मध्यप्रदेश के पहले शहीद के रूप में लिया जाता है। गुलाब सिंह महात्मा गाँधी के भारत छोड़ो अभियान का हिस्सा बने थे और देश की आजादी के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया था।

16 साल की उम्र में हुए थे शहीद – गुलाम भारत को आजाद कराने के लिए देश के युवाओं ने अदम्य साहस दिखाया था। जब महात्मा गाँधी ने 1942 में देश को आजाद कराने के लिए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू किया तो देश के कोने-कोने से युवा इस आंदोलन से जुड़े। जबलपुर से गुलाब सिंह पटेल इस अभियान से जुड़े और हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति का संचार किया।

14 अगस्त का ही दिन था, जब देश की आजादी का स्वप्न आंखों में लिए गुलाब सिंह पटेल ने अपनी आँखें मूँद लीं थी, लेकिन आखिरी साँसें लेने से पहले उन्होंने कमानिया गेट पर तिरंगे को शान से लहराते देखा था। शहादत के समय गुलाब सिंह की उम्र महज 16 साल थी, शहीद होकर उन्होंने मध्यप्रदेश के पहले बलिदानी होने का गौरव प्राप्त किया था।

सिर में खाई थी गोली – जब आठ अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मुंबई अधिवेशन में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव पारित हुआ, तो जबलपुर में स्वतंत्र भारत का सपना देखने वाले युवाओं में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। युवा जोश को देखकर डरी अंग्रेजी फौज ने नौ अगस्त को इलाके के सभी स्वतंत्रता सेनानियों को हिरासत में ले लिया। क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी के बाद युवाओं ने अगस्त क्रांति को सफल बनाने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। अगले ही दिन 10 अगस्त 1942 को कमानिया गेट चारों ओर से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से खचाखच भर गया। घमंडी चौक से जब गुलाब सिंह के नेतृत्व में विद्यार्थियों का जुलूस पुलिस की घेराबंदी तोड़कर तिरंगा थामे आगे बढ़ा तो, वंदेमातरम के उद्घोष से पूरा आकाश गूँज उठा। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने जब 'वंदे मातरम्' के नारे लगाए तो अंग्रेजी हुकूमत हिल गई। आनन-फानन में तत्कालीन सिटी मजिस्ट्रेट देवबक्श सिंह ने कार्रवाई का निर्देश दिया, इस दौरान एक पुलिसकर्मी ने गुलाब सिंह पर निशाना साधकर उन्हें गोली मार दी। गोली सीधी जाकर गुलाब सिंह के सिर में लगी, उन्हें रक्तरंजित अवस्था में विक्टोरिया अस्पताल लेकर जाया गया।

गंभीर रूप से घायल अवस्था में गुलाब सिंह पटेल ने साथियों से सिर्फ यही कहा कि कमानिया गेट में तिरंगा फरहाकर मुझे बता देना। उनकी इच्छा को पूरा करने के लिए जैन बायज स्काउट्स एसोसिएशन के विद्यार्थियों ने कमानिया पर तिरंगा झंडा फहराया, जब ये खबर गुलाब सिंह को मिली तो उन्हें बहुत आत्मसंतुष्टि मिली। चार दिन गंभीर हालत में उन्होंने अस्पताल में जिंदगी की जंग लड़ी लेकिन 14 अगस्त 1942 के दिन उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया। 14 अगस्त के ही दिन गुलाब सिंह का जन्म हुआ था और इसी दिन वे दुनिया से रुखसत हो गए।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – अति लघूत्तरीय प्रश्न –

1. अमर शहीद मोतीचंदजी शाह का जन्म कब हुआ था?
2. अमर शहीद मोतीचंद शाहजी किस कक्षा तक पढ़े थे?
3. मध्यप्रदेश के पहले शहीद कौन थे?
4. अमर शहीद मोतीचंद शाहजी ने कौनसी समाज की स्थापना की थी?
5. गुलाब सिंह किसका हिस्सा बने थे?
6. 14 अगस्त का गुलाब सिंह के जीवन में क्या महत्त्व था?
7. शाहजी अपने जीवन में कौन–कौन से नियमों का पालन करते थे, संक्षेप में लिखिए?

प्रश्न 2 – सत्य-असत्य में उत्तर दीजिए –

1. शाहजी का जन्म सोलापुर जिले के करकल ग्राम में हुआ था।
2. शहादत के समय गुलाब सिंह की उम्र 16 वर्ष की थी।
3. शाहजी विदेशी वस्त्रों का प्रयोग करते थे।
4. बलिदान की खुशी में शाहजी का वजन कई पौण्ड बढ़ चुका था।

प्रश्न 3 – सही जोड़ी बनाइए –

1.	गुलाबसिंह	क.	जबलपुर
2.	उपवास	ख.	22
3.	परीषह	ग.	शाहजी के पिताजी
4.	सेठ पदमसी	घ.	पहले बलिदानी
5.	कमानिया गेट	ङ	व्रत

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

अपने आसपास के अमर शहीदों की सूची बनाओ।

5 एकांकी

सन्मति वन

(शिकारी दौड़ते हुए आता है। सभी पशु भाग जाते हैं मात्र शेर रह जाता है।)

शिकारी – हा-हा-हा अभी सुन रहा था, कुछ जानवरों की आवाज निराली। कहाँ भाग गये सब, अब आयी उन पर विपदा भारी। थोड़ी सी बाकी अब आस, इच्छा हो रही है खाऊँ हिरनी माँस।

शेर – (दहाड़ कर) भाग जाओ यहाँ से ऐ दुष्ट प्राणी! नहीं मिल सकता तुझे बूँद भर भी पानी। मैं शेर हूँ इस जंगल का राजा, शिकार करोगे तो दूँगा सजा। अरे...सिर्फ जीभ के स्वाद के लिए क्यों माँस खाते हो, इन निर्दोष प्राणियों को अपना शिकार बनाते हो?

शिकारी – (खलनायकी स्वर में) देख! मेरे सामने से हट जा मेरे हाथों में बंदूक है। तू बेमौत मारा जायेगा, मेरा निशाना अचूक है।

शेर – तू भी सुन ले। जब तक इस देह में जान है, उजाड़ नहीं सकता तू वन का दुश्मन है (दहाड़ कर शिकारी के ऊपर कूदता है; किन्तु शिकारी कमर से छुरा निकाल कर शेर की जाँघों में एक दर्दनाक वार करता है, शेर घायल हो जाता है और शिकारी बंदूक उठाकर भागते हुए कहता है।)

शिकारी - निश्चिन्त मत होना, मैं अवश्य आऊँगा, जानवरों को मैं अवश्य खाऊँगा।

शेर - (चिल्ला कर) आह....ऐ दुष्ट प्राणी! तुझे क्या मिला-

बंदर - (चिल्ला कर) राजा जी....राजा जी (साथ में)

हिरनी - अरे राजाजी की आवाज दौड़ो....(सभी का प्रवेश)

खरगोश - अरे-अरे, देखो, राजाजी को खून बह रहा है।

कोयल - लगता है उस दुष्ट मानव ने ही राजाजी को मारा है।

हिरनी - जल्दी करो, राजाजी के घाव को बाँध दो।

(थोड़ी देर बाद लोमड़ी का प्रवेश)

लोमड़ी - राजाजी की जय हो.....2.....

शेर - (आह भरते हुए) कहो क्या बात है लोमड़ी?

लोमड़ी - राजन! एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। एक कुत्ते ने अपराध किया है, महाराज न्याय चाहिए।

खरगोश - लेकिन राजाजी की हालत ठीक नहीं है। वे अस्वस्थ हैं।

शेर - नहीं, खरगोश! प्रजा के लिए मेरा दरबार हमेशा खुला है। दरबार लगाया जाये।

(दरबार लगता है राजाजी सिंहासन पर बैठे हैं, कुत्ते को पेश किया जाता है।)

शेर - इसने क्या अपराध किया है?

लोमड़ी - महाराज! इसने घोर अपराध किया है। सन्मति वन के शासन को कलंकित किया है। महाराज! इसने चोरों द्वारा दिये गये बिस्कुटों के लोभ में आकर अपने मालिक के घर में चोरी करवा दी, इसे कठोर दंड मिलना चाहिए।

शेर - (कुत्ते से) – क्या यह सब सत्य है?

कुत्ता - मुझे माफ कर दीजिए राजाजी.....(गिड़गिड़ाते हुए)

शेर - (क्रोध पूर्वक) नहीं। ऐ दुष्ट! तूने ऐसा अपराध किया है, जिससे सन्मति वन को ही नहीं बल्कि अपनी कुत्ता जाति को भी कलंकित किया है, तुझमें आदमी के गुण आ गये हैं, तुझे कुत्तों की बिरादरी से बाहर किया जाता है। (सिपाही कुत्ते को ले जाते हैं)

शेर - लोमड़ी!

लोमड़ी - जी, महाराज!

शेर - आज कहाँ गये हैं हाथी दादा, क्यों रहते वे अपना कर जीवन सादा। उन बुजुर्ग से हमें सलाह लेनी हैं, शिकारी की हरकतें उनसे कहनी हैं।

लोमड़ी - लीजिए वे भी आ गये।

हाथी - (झुककर) राजाजी की जय हो।

शेर - आओ आओ हाथी दादा! तुम ज्ञानी हम सबसे ज्यादा। हम सबको तुम राय बताओ, दुष्ट शिकारी से बचने का उपाय सुझाओ।

हाथी - घटनायें मैंने भी सुनी हैं सारी, सन्मति वन पर आयी है विपदा भारी।

शेर - क्या किया जाये अब बताओ, तुम सभी मिलकर तरकीब सुझाओ।

बंदर - (क्रोध तथा आवेशपूर्ण स्वर में) हम उसे जिंदा नहीं छोड़ेंगे महाराज।

हाथी दादा- बेवकूफ न बनो बंदर, रहना सीखो सीमा के अंदर। हम सभी को थोड़ा इंतजार करना है, पहले सरलता से उसे समझाना है।

शेर – हाँ! यही ठीक रहेगा। कल सुबह हम सभी उससे एक साथ मिलेंगे।

(सभी चले जाते हैं, किन्तु खरगोश पुनः लौट आता है)

खरगोश – अहा! रात्रि आ गयी है, भूख भी छा गयी है। हरी-हरी घास को खा लूँ, ठंडा-ठंडा पानी पी लूँ। (घूमता है घास खाता है, नाचता है, तभी दुबक कर शिकारी आता है और उसे पकड़ लेता है)

खरगोश – आह-आह बचाओ-बचाओ (चिल्लाता है)

शिकारी – (खलनायकी स्वर में) ही ही ही...दूर रहकर सभी यहाँ पर, सो रहे हैं, फिर आप चिल्ला कर क्यों रो रहे हैं? ही ही ही....कोई नहीं सुनेगा, अब तू मेरे हाथों ही मरेगा।

खरगोश – (रोते हुए) मुझ पर दया करो, मुझे छोड़ दो, तुम मुझे यह तो बताओ कि मुझे मारने से तुम्हें मिलेगा क्या?

शिकारी – ही ही ही...अरे तुम इतना नहीं जानते, लड़कियाँ जिस लिपस्टिक को बड़े शौक से लगाती हैं, वह तुम्हारे ही खून से बनती है। अभी और जानवरों को मारूँगा, जिनके चमड़े से जूते, बेल्ट और पर्स बनेंगे। हा हा हा....।

खरगोश – (चीखता है) क्या? हे मनुष्य! क्या तुम इतने गिर गये हो? अरे! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती जब मेरा खून तुम्हारे ओठों पर मुस्कुराता है?

शिकारी – बहुत बक-बक कर रहा है चुप रह (किन्तु अचानक खरगोश छटक कर भागता है, परन्तु शिकारी उसे घेर लेता है)

खरगोश – (रोते हुए) छोड़ दो मुझको छोड़ दो मुझको, दया करो कुछ रहम करो। जीने दो मुझको, जीने दो मुझको, न मुझ पर ये जुल्म करो। (तभी शिकारी पकड़ लेता है और एक दर्दनाक वार चाकू से उसकी पीठ पर करता है और खरगोश चिल्लाता है।)

खरगोश – बचाओ! (मर जाता है)

(तभी शेर वहाँ आ जाता है, साथ में दो सिपाही कुत्ते भी)

शेर – (चीखकर) अरे-अरे ऐ! दुष्ट! तूने क्या किया! मेरे प्यारे भोले खरगोश को मार डाला। सिपाहियो! पकड़ लो इसे। (शिकारी को पकड़ते हैं)।

(सभी आते हैं और चिल्लाते हैं और खरगोश की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हैं)

शेर – अरे निर्दयी! आज फैसला होकर रहेगा, सिपाहियो! इसे मजबूती से पकड़े रहो।

बंदर – (क्रोधपूर्वक) इसके बारे में अब न सोचें महाराज, हाथ कटवा दें इसका तुरन्त अभी और आज। अब सहनशक्ति के बाहर है इस दुष्ट का आतंक, हम सब मिलकर मारें और कर दें इसका अंत। (सभी शिकारी पर टूट पड़ते हैं)

हाथी और शेर–न, न, न ऐसा मत करो छोड़ दो इसे इसे सजा जरूर मिलेगी। (किन्तु भीड़ की आवाज के आगे इनकी आवाज दब जाती है और भीड़ की मार से बिलखता शिकारी चिल्लाता है...)

शिकारी – मुझे छोड़ दो, माफ कर दो.....।

लोमड़ी – तुम हमें सताओगे, तो यही फल पाओगे।

बंदर – मार खाओगे, तभी तुम्हें मालूम चलेगा कि दर्द कैसा होता है।

(तभी शेर चिल्लाता है –)

शेर – रुक जाओ! (सभी मारना छोड़ देते हैं और डर जाते हैं)

शेर – कोई पाप करता है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम भी वैसा पाप कर नीचता पर उतर आयें। छोड़ दो उसे।

शिकारी – मैं...मैं प्रायश्चित्त करूँगा महाराज....(मंच पर घूम-घूम कर गाता है) हे प्रभु तू दया करके, मुझे माफ कर देना। हे प्रभु मैं भटका हूँ, हिंसा के अंधेरे में। हर तरफ दु:ख ही है, इस कर्म के रेले में। पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह बता देना। अहिंसा की ही है विजय, क्षमा मुझे करना। इतनी सी विनय तुमसे, मुझे माफ कर देना।

हाथी – प्रतिज्ञा करो कि तुम कभी अण्डा, माँस नहीं खाओगे। निर्दोष जीवों को बेवजह नहीं सताओगे।

शिकारी – मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। अब मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा।

सभी – हाँ हाँ महाराज! इसे माफ कर दीजिए हम इससे यही चाहते थे।

राजा – उठो, तुम्हें माफ करते हैं जाओ और बर्बरता पूर्ण राक्षसी जीवन छोड़कर, शाकाहारी जीवन व्यतीत करो और मनुष्य जन्म लिया है, उसे सार्थक करो।

सभी – राजाजी की जय हो....जय हो.....(पर्दा गिर जाता है)

जाल

(उत्तम व लोभ दो व्यक्ति मंच पर आते हैं। दोनों अलग-अलग दिशा से आते हैं। एक जगह मिलते हैं और वार्तालाप होता है।)

उत्तम – अरे भाई! आप कौन हो?

लोभ – मैं लोभ हूँ।

उत्तम – आप कहाँ रहते हो?

लोभ – मैं हर संसारी के हृदय में निवास करता हूँ।

उत्तम – पर आप वहाँ क्यों रहते हो?

लोभ – सारी दुनिया को मेरे जाल में फँसाये रखने के लिए।

उत्तम – पर भाई, आप ऐसा क्यों करते हो?

लोभ – इसलिए कि मेरा साम्राज्य रहे और मेरे विरोधी का राज्य स्थापित न हो।

उत्तम – आपका विरोधी कौन है?

लोभ – उत्तम शौच अर्थात् निर्लोभता।

उत्तम – वह आपका विरोधी क्यों है?

लोभ – क्योंकि मैं जीवों को मेरे जाल में फँसाये रखकर मुक्त नहीं होने देता चाहता और यह जीवों को पवित्र कर मुक्ति के मार्ग पर बढ़ाता है।

उत्तम – यह तो अच्छी बात है। इससे आपको क्या कष्ट है?

लोभ – मुझे बड़ा कष्ट है, मेरी संख्या कम हो जाती है और वह व्यक्ति मेरे जाल से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। वह पूर्ण सुखी हो जाता है।

उत्तम – ओ हो! अब समझा! आप वही हो, जिसके बारे में लोग कहते हैं –

"**लोभ पाप का बाप बखाना।**"

अर्थात् पाप के पापाजी आप ही हो।

लोभ – हाँ, हाँ, इसमें कोई शक है क्या? मैं ही हूँ, पाप का बाप।

उत्तम – कोई शंका नहीं। बस, मैं तो यही चाहता हूँ कि मुझे आपसे मुक्ति मिले।

लोभ – आपको मुक्ति ऐसे ही नहीं मिल सकती है।

उत्तम – क्यों?

लोभ – क्योंकि मुक्ति का उपाय मुझसे दूर भागना नहीं है।

उत्तम – तो फिर क्या है?

लोभ – यह मैं क्यों बताऊँ?

उत्तम – आप नहीं बताओगे...?

लोभ – हाँ–हाँ नहीं बताऊँगा।

उत्तम – मैं जानता हूँ कि तुमसे मुक्ति का उपाय क्या है?

लोभ – अच्छा, तुम जानते हो तो बताओ क्या उपाय है?

उत्तम – व्यवहार से (बाहर में) जीवन में संतोष धारण करना और निश्चय से (अंदर में) आत्मलीनता करना – यही उपाय है।

लोभ – यह बात सब जानते हैं, पर मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि फिर भी लोग मेरे जाल में फँसे रहते हैं।

उत्तम – कोई अज्ञानी फँसा रहता होगा, पर अब मैं नहीं रहूँगा। मैं अपना पुरुषार्थ कर तुमसे मुक्त हो रहा हूँ।

(उत्तम आत्मा का ध्यान करता है। कुछ समय तक लोभ वहीं खड़ा रहता है। उत्तम की आत्मलीनता बढ़ती जाती है और लोभ धीरे–धीरे खिसकते हुए चला जाता है।)

(पटाक्षेप)

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निम्न कथन किसने, किससे कहे लिखिए –

1. प्रजा के लिए मेरा दरबार हमेशा खुला है।
   किसने कहा .... किससे कहा ....
2. तुम ज्ञानी हम सबसे ज्यादा।
   किसने कहा .... किससे कहा ....
3. कोई पाप करता है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम भी नीचता पर उतर आएँ।
   किसने कहा .... किससे कहा ....
4. सन्मति वन पर आई है विपदा भारी।
   किसने कहा .... किससे कहा ....
5. व्यवहार से संतोष करना।
   किसने कहा .... किससे कहा ....

प्रश्न 2 – निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हाथी ने शिकारी को क्या प्रतिज्ञा दिलवाई?
2. वन का क्या नाम था?
3. पापों का बाप कौन है?
4. लोभ कहाँ निवास करता है?

प्रश्न 3 – सही जोड़ी बनाइए –

1.	खरगोश	क.	लोभ
2.	शेर	ख.	दुष्ट
3.	कुत्ता	ग.	लिपिस्टक
4.	हाथी	घ.	प्रजा का रक्षक
5.	शिकारी	ङ.	बुजुर्ग एवं सलाहकार

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

बच्चों क्या आप खाद्य वस्तुओं पर लिखें 'ई' नंबर के बारे में जानते हैं यदि नहीं तो आप इंटरनेट की सहायता से 'ई' नंबर का सच जान सकते हैं। हमें ऐसी किसी भी वस्तु का उपयोग नहीं करना चाहिए जो किसी भी प्रकार से जीवों को दु:खी कर या मारकर बनाई गई हो।

6 हमारे पर्व

रक्षाबंधन पर्व

रक्षाबंधन पर्व भारतीय संस्कृति का प्रमुख पर्व है। इसको मनाए जाने के अनेक कारण भी हैं। सावन में मनाए जाने के कारण इसे सावनी या सलूनो भी कहते हैं।

बोलचाल की भाषा में इसे रक्षाबंधन या राखी कहा जाता है। रक्षा सूत्र बाँधने की परंपरा प्राचीन है। किसी भी व्यक्ति को यज्ञ, युद्ध, आखेट, नए संकल्प और धार्मिक अनुष्ठान के दौरान कलाई पर नाड़ा या सूत का धागा जिसे 'कलावा' या 'मौली' कहते हैं, वह बाँधा जाता है।

इस पर्व पर बहिनें भाई को राखी बाँधकर अपनी रक्षा एवं भाई की प्रसन्नता की कामना करती हैं। वर्तमान में यह त्योहार भाई-बहन तक सीमित रह गया है। इस समय तो राखी के कई रूप हो चले हैं। राखी कच्चे सूत जैसे सस्ती वस्तु से लेकर रंगीन कलावे, रेशमी धागे तथा सोने या चाँदी जैसी मँहगी वस्तु तक की भी हो सकती है।

जैन व हिन्दू धर्म में रक्षाबंधन के त्योहार को मनाने को लेकर भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं।

जैनधर्म में यह पर्व अत्यंत आस्था और उत्साह से मनाया जाता है, लाखों वर्षों पूर्व 19वें तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ के बाद तथा 20वें तीर्थंकर भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ के काल के पूर्व उज्जयिनी नगरी के पूर्व मंत्री तथा हस्तिनापुर के तत्कालीन राजा बलि द्वारा पूर्व बैर के कारण अकंपनाचार्य आदि 700 मुनिराजों पर घोर उपसर्ग (कष्ट) किया गया।

क्षुल्लक पुष्पदंत से इस बात की जानकारी मिलने पर मुनि विष्णुकुमार ने मुनिपद छोड़कर बौने ब्राह्मण का रूप बनाकर विक्रियाऋद्धि के प्रयोग से मुनिराजों की रक्षा की, वह दिवस श्रावण की पूर्णिमा रक्षा का संकल्प दिवस है।

हिंदू परम्परा में एक घटना आती है कि श्रीकृष्ण की ऊँगली से खून निकल रहा था। तभी द्रौपदी ने अपनी साड़ी का छोटा सा हिस्सा निकाल कर कृष्ण की ऊँगली पर बाँध दिया। बदले में कृष्ण ने भी वादा किया कि वह हमेशा द्रौपदी की रक्षा करेंगे। यही कारण था कि जब कौरवों और पांडवों की भरी सभा में द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था, तब श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की मदद की।

इस त्योहार से जुड़ी यमराज और यमुना की कहानी भी काफी प्रचलित है। इस तरह की न जाने कितनी और कहानियाँ हैं जो पुराणों में रक्षाबंधन की प्राचीनता साबित करती हैं।

इतिहास में भी राजा महाराजा के काल में राखी के महत्त्व के अनेक उल्लेख मिलते हैं। मेवाड़ की महारानी कर्णावती ने मुगल राजा हुमायूं को राखी भेज कर रक्षा-याचना की थी, हुमायूं ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी।

सिकंदर की पत्नी ने अपने पति के हिंदू शत्रु पुरु को राखी बांधकर उसे अपना भाई बनाया था और युद्ध के समय सिकंदर को न मारने का वचन लिया था। पुरु ने युद्ध के दौरान हाथ में बंधी राखी और अपनी बहन को दिए हुए वचन का सम्मान करते हुए सिकंदर को जीवनदान दिया था।

इस तरह इस पर्व के अनेक पौराणिक ऐतिहासिक तथ्यों को देखते हुए यह पर्व केवल एक धर्म तक सीमित न होकर जन-जन की सुरक्षा की भावना का पर्व है।

महर्षि वेद व्यास द्वारा श्रावण की पूर्णिमा को ही संस्कृत ग्रंथों के लेखन का शुभारंभ किया गया था। अतः संस्कृत प्रेमियों द्वारा आज का दिन संस्कृत दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

दसलक्षण पर्व

भारत देश त्योहारों एवं पर्वों का देश है । हमारे देश में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अनेक प्रकार के पर्वों का आयोजन किया जाता है । जैन धर्म में दश लक्षण पर्व, पर्वाधिराज के नाम से जाना जाता है अर्थात् जैन धर्म के सभी पर्वों में दश लक्षण पर्व सर्वोत्तम पर्व है। यह पर्व वर्ष में चैत्र, भाद्र और माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी से चतुर्दशी तक वर्ष में तीन बार मनाया जाता है । भाद्रपद मास में आने वाले दश लक्षण पर्व को अधिकतर लोग उत्साह पूर्वक मनाते हैं। इन पर्वों में आत्मा के जो हितकर भाव क्षमा, मार्दव अर्थात् कोमलता, आर्जव अर्थात् सरलता, शौच अर्थात् पवित्रता, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य अर्थात् अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की आराधना की जाती है, इनके स्वरूप को समझा जाता है और इनको प्रकट करने की भावना भायी जाती है। यह पर्व असयंम से संयम, भोग से योग, राग से विराग की ओर लाने वाले पर्व हैं यह सार्वकालिक, सार्वभौमिक व सार्वजनिक पर्व हैं क्योंकि क्षमा आदि दश प्रकार के भाव प्रत्येक क्षेत्र, काल व व्यक्ति को हितकर हैं। यह पर्व पर्यूषण पर्व के नाम से भी जाना जाता है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय में इस पर्व से पहले आठ दिन के पर्यूषण पर्व मनाये जाते हैं।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1. .... पर्व सर्वोत्तम है।
2. रक्षाबंधन त्योहार सामाजिक ही नहीं अपितु .... संबंध भी रखता है।
3. रक्षाबंधन के दिन .... बाँधा जाता है।
4. दशलक्षण पर्व को .... के नाम से भी जाना जाता है।
5. हुमायूँ को .... ने राखी बाँधी थी।

प्रश्न 2 – निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. पर्वाधिराज के नाम से किसे जाना जाता है?
2. रक्षाबंधन पर किस मुसलमान राजा ने राखी की लाज रखी?
3. दस धर्मों के नाम बताइये?
4. मौली किसे कहते हैं?
5. रक्षाबंधन पर्व किसकी सुरक्षा का पर्व है?

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

रक्षाबंधन एवं दशलक्षण पर्व के अलावा भारत में मनाये जाने वाले त्योहारों के नाम खोज कर उनको मनाये जाने के कारण लिखिए।

7 हमारे तीर्थ : श्रवणबेलगोला

श्रवणबेलगोला भारत के कर्नाटक राज्य के हासन जिले में बेंगलुरु से 144 किमी दूर स्थित एक प्रमुख जैन तीर्थस्थल है, श्रवणबेलगोला के जैन मंदिरों का संग्रह हर साल तीर्थयात्रियों की बड़ी संख्या को अपनी तरफ आकर्षित करता है।

इस जगह का नाम यहाँ स्थित एक सुन्दर श्वेत सरोवर के कारण पड़ा है। कन्नड़ भाषा में 'वेल' का अर्थ होता है 'श्वेत' और 'गोल' का मतलब होता है सरोवर। श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरि और विंध्यगिरि नाम की दो पहाड़ियाँ हैं।

विंध्यगिरि पहाड़ी पर स्थित दुनिया में सबसे बड़ी अखंड पत्थर से बनी हुई गोम्मटेश्वर की 57 फीट ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा एक अखंड पत्थर और पीछे बिना किसी सहारे के बनी होने के कारण भारत के आश्चर्यों में शामिल है। गोम्मटेश्वर या भगवान बाहुबली जैन धर्म के पहले तीर्थंकर आदिनाथ के पुत्र थे। ध्यान करने के फल में उन्होंने सर्वज्ञता प्राप्त कर ली थी। श्रवणबेलगोला में गोम्मटेश्वर की प्रतिमा का निर्माण 981 ईस्वी में गंगा वंश के राजा राजमल्ल के एक मंत्री चनुवंडराय (Chanvundaraya) या चामुण्डराय द्वारा अपनी माता कालल देवी की इच्छा पूरी करने के लिए किया गया था।

इस प्रतिमा के आधार पर तमिल और कन्नड़ में शिलालेख लिखे हुए हैं। यहाँ हर 12 साल में एक बार 'महामस्तकाभिषेक' नाम का त्यौहार मनाया जाता है, जिस दौरान प्रतिमा का अभिषेक कराया जाता है।

चामुण्डराय के द्वारा चन्द्रगिरि पर्वत पर इन्द्र नीलमणि की नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान करवायी गयी है।

चन्द्रगिरि के बारे में माना जाता है कि यह वो जगह है जहाँ पर चन्द्रगुप्त मौर्य और उनके आध्यात्मिक गुरु आचार्य भद्रबाहु स्वयं ध्यान करते थे। इन पहाड़ियों पर चंद्रगुप्त मौर्य को समर्पित, चंद्रगुप्त बसदि स्थित है जिसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया था। चन्द्रगिरि में भिक्षुओं के कई स्मारक भी हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि 5वीं शताब्दी ईस्वी के बाद बनाये गए हैं।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. श्रवणबेलगोला किस राज्य में स्थित है?
2. श्रवणबेलगोला में कौनसी दो पहाड़ियाँ हैं?
3. भगवान बाहुबली कौन थे?
4. गोम्मटेश्वर प्रतिमा का निर्माण किसने करवाया?
5. यहाँ मस्तकाभिषेक कब किया जाता है?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. चंद्रगुप्त वसदि को .... द्वारा बनाया गया था।
2. श्रवणबेलगोला बेंगलुरु से .... कि.मी. दूर है।
3. भिक्षुओं के स्मारक .... में हैं।
4. गोम्मटेश्वर की .... फीट ऊँची प्रतिमा है।

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

आपने अभी तक कितने तीर्थ किए हैं, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए और वहाँ के अनुभवों को कक्षा में सुनाइए?

8 कविताएँ

कम्प्यूटर पर चिड़िया

बहुत देर से कम्प्यूटर पर, बैठी चिड़िया रानी।
बड़े मजे से छाप रही थी, कोई बड़ी कहानी।।
तभी अचानक चिड़िया ने जब, गर्दन जरा घुमाई।
किंतु न जाने किस कारण वह, जोरों से चिल्लाई।।
कौआ भाई फुदक-फुदक कर, शीघ्र वहाँ पर आए।
'तुम्हें क्या हुआ बहिन चिरैया', कौआ जी घबराए।।
चिड़िया बोली पता नहीं है, कैसी ये लाचारी।
हुआ दर्द गर्दन में मुझको, कौआ भाई भारी।।
तब कौए ने गिद्ध वैद्य से, उसकी जाँच कराई।
वैद्यराज ने सर्वाईकल, की बीमारी पाई।।
कम्प्यूटर पर बहुत देर थी, बैठी चिड़िया रानी।
जोर पड़ा गर्दन पर सच में, तो की थी नादानी।।
कम्प्यूटर पर बहुत देर मत, बैठो मेरे भाई।
बहुत देर बैठा जो उसको, यह बीमारी आई।।

युक्ति से होती मुक्ति

युक्ति से होती मुक्ति, थोड़ा जुगत जमाऊँगा।
धीरज धारण करके, सच्चा पथ अपनाऊँगा।।
जन्म लिया है, जिस धरा पर,
प्राण थमा है, जिस हवा पर,
मिट्टी, वायु, अम्बर और पानी,
गेहूँ, चावल और गुड़ धानी
कृतज्ञता अर्पित उन पर, सच्चा पथ अपनाऊँगा।
जग–जीवन–जरा–जल्प से,
जीर्ण हुआ जो मानव मन है,
सत्य, अहिंसा, नित सदाचार से,
उपकृत हुआ जो विजित जन है,
सेवा–सुमन अर्पित उन पर, सच्चा पथ अपनाऊँगा
हो सरल भावना सदा मेरी,
न्याय–नीति पथ चला करूँ,
सम्यक् रीति से सद् कार्य करूँ,
चेतन मूरत देख निज ज्ञायक की,
मानवता का सत्कार करके, सच्चा पथ अपनाऊँगा।

चिदानन्द - रस पीना सीखो...

प्रेम-भाव से मिलना सीखो।
फूलों-जैसा, खिलना सीखो।।
पर के दोष, कभी मत देखो,
निज-दोषों को गिनना सीखो।।

निज-स्वभाव में झुकना सीखो।
क्रोध में थोड़ा रुकना सीखो।।
इष्ट/अनिष्ट न कोई जग में,
स्वयं स्वयं से मिलना सीखो।।

आत्म-भावना, भाना सीखो।
स्व-सन्मुखता, लाना सीखो।।
निज-स्वभाव, साधन के द्वारा।
निज-निधान को पाना सीखो।।

सुख-दु:ख में मुस्काना सीखो।
समता-भाव, बढ़ाना सीखो।।
सब स्वतंत्र, परिणमन जगत का।
सम्यक्-दर्शन[1] पाना सीखो।।

वस्तु-स्वरूप समझना सीखो।
वर्तमान में जीना सीखो।।
सब, संकल्प-विकल्प तोड़कर,
चिदानन्द-रस पीना सीखो।।

1. सम्यक्-दर्शन = सच्ची समझ

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाओ –

1.	गिद्ध	क.	सद्+आचार
2.	सर्वाईकल	ख.	निज ज्ञायक
3.	फुदक–फुदक	ग.	बीमारी
4.	चेतन मूरत	घ.	कौआ
5.	सदाचार	ङ.	वैद्यराज

प्रश्न 2 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. कविता में कौआ ने बहिन किसको कहा है?
2. मुक्ति किससे होती है?
3. हमें किसका सत्कार करना है?
4. हमें कैसे सुमन अर्पित करना चाहिए?

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

इसी तरह की अन्य नैतिक शिक्षा परक कविताओं को खोजकर याद कर कक्षा में सुनाओ।

९ सदाचार

पाँच पाप का फल

सुकुमाल मुनि के जीव ने नागशर्मा की पुत्री नागश्री के भव (जन्म) में मुनिराज सूर्यमित्र से पंचाणुव्रत (हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह – इन पाँच पापों के गृहस्थ जीवन में संभवित स्थूल त्याग को पंच अणुव्रत कहते हैं) धारण किये थे। परम हितकारी जैनधर्म और व्रतों के स्वरूप से अनभिज्ञ तथा जैनधर्म के प्रति द्वेषभाव रखनेवाले नागशर्मा को यह बात स्वीकार नहीं हुई कि माता–पिता की आज्ञा के बिना किसी के बच्चे को उन्होंने व्रत क्यों दिए? अत: वह उन व्रतों को वापस करने अपनी बेटी नागश्री के साथ मुनिराज के पास वन में जा रहा था कि रास्ते में उन्होंने देखा कि राज्य के सिपाही दोनों हाथों में हथकड़ियाँ लगे एक युवा पुरुष को बाँध कर ले जा रहे हैं। यह देखकर नागश्री ने अपने पिता से उसका अपराध पूछा। पिता को भी उसे बाँधने का कारण मालूम न होने से नागश्री ने कोतवाल से पूछा कि किस अपराध के कारण उसे बाँधकर ले जाया जा रहा है? कोतवाल ने बताया कि ''चम्पानगरी में अठारह करोड़ दीनार के मालिक देवदत्त साहूकार का पुत्र वसुदत्त बहुत जुआ खेलता था अक्षद्यूत नामक जुआरी उससे एक लाख दीनार हार गया था। जल्दी धन न चुका पाने पर पापी वसुदत्त ने अक्षद्यूत को छुरे से मार दिया। अत: राजा ने उसे फाँसी देने का दंड दिया

था।'' यह सुनकर नागश्री ने अपने पिता से कहा कि ''हिंसक जीव तो लोक में भी मृत्यु आदि दण्ड का ही पात्र होता है। अतः मुनिराज से लिए गए हिंसा के त्यागरूप अहिंसा अणुव्रत में क्या दोष है? उसे मैं क्यों छोड़ूँ?''

तब पिता ने उसे अहिंसाणुव्रत को रखने की स्वीकृति दे दी। शेष व्रतों को वापस करने जब वे आगे बढ़े तो उन्होंने एक मनुष्य को उल्टा लटका हुआ देखा, जिसके मुँह में कांटे लगे हुए थे और जिसे पीटा भी जा रहा था। यह दुर्दशा देख नागश्री ने खेदपूर्वक पूछा कि ''उस व्यक्ति को इतना दु:ख क्यों दिया जा रहा है।''

उसके पिता ने बताया कि ''पड़ोसी देश का राजा वज्रवीर्य, राजा चन्द्रवाहन पर चढ़ाई करके उसका राज्य लेना चाहता था। अतः उसने अपने दूत से राजा चन्द्रवाहन के पास आज्ञा में रहना स्वीकार करने अथवा युद्ध के लिए तैयार रहने का संदेश भेजा। दूत का संदेश सुनकर राजा ने विशाल सेना सहित बल नामक सेनापति को युद्ध के लिए भेजा। जब महायुद्ध हुआ तो एक अन्य राजा तक्षक के अंगरक्षक ने मृत्यु से भयभीत होकर राजा चन्द्रवाहन को झूठा समाचार दिया कि उनका सेनापति बल पकड़ा गया जिसे सुनकर राजा उदास हो गये? इधर वास्तव में जब सेनापति बल ने शत्रु को जीतकर बंदी राजा वज्रवीर्य को राजा चन्द्रवाहन के सामने पेश किया तो के अंगरक्षक द्वारा कही गई झूठ बात के कारण तक्षक राजा ने उसे दंडित करने की आज्ञा की थी।''

यह सुनकर नागश्री ने कहा कि ''जिससे राजदण्ड, प्रजादण्ड और समाजदण्ड मिलता हो ऐसा झूठ तो कभी किसी को भी नहीं बोलना चाहिए।'' अतः सत्य बोलना हितकर होने से सत्याणुव्रत को भी रखने की आज्ञा नागशर्मा ने उसे दे दी।

शेष व्रतों को वापस करने के लिए आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति को शूली पर चढ़ाया जा रहा था। कारण पूछने पर पिता ने उसकी बात को टालना चाहा, परन्तु कोतवाल से पूछने पर नागश्री को पता चल गया कि उस व्यक्ति ने एक स्थान पर रखी हजार दीनार चुराई थीं, अतः उसे फाँसी की सजा मिली। 'चोरी पाप के कारण, धन नाश, अपयश, प्राणदण्ड, आदि दुःख सहने पड़ते हैं। अतः इसके त्यागरूप अचौर्याणुव्रत श्रेष्ठ ही है। यह विचारकर, नागशर्मा ने पापों से भयभीत और अपने व्रतों की रक्षा में नागश्री को यह व्रत रखने की स्वीकृति दे दी।

आगे बढ़ते हुए उन्होंने नाक-कान कटे हुए हैं जिसके और पुरुष के मस्तक के साथ बँधा है कंठ जिसका - ऐसी एक नारी का दृश्य देखा। नागशर्मा ने बताया कि "चम्पापुरी में एक मनस्क नामक वणिक के नंद-सुनंद नाम के दो पुत्र तथा उनके मामा सूरसेन की मदाली नामक कन्या थी। नंद ने मामा के सामने मदाली से विवाह करने का प्रस्ताव रखा तो निश्चित हुआ कि बारह वर्ष बाद नंद के परदेश से वापस आने पर दोनों का विवाह होगा। बारह वर्ष व्यतीत होने पर भी जब नंद लौटकर नहीं आया तब चिंतित होकर, कुछ दिनों की राह देखने के बाद सूरसेन ने मदाली का विवाह सुनंद के साथ करने का निर्णय लिया। विवाह में कुल पाँच दिन शेष रहने पर नंद वापस आ गया। तब नंद ने छोटी भाई की पत्नी होने के कारण मदाली को पुत्री समान कहकर तथा बड़े भाई की पत्नी होने के कारण माता समान कहकर सुनंद ने उससे विवाह करने से इंकार कर दिया। उसी नगर में एक बारह करोड़ दीनारों का स्वामी व्यभिचारी दुर्बुद्धि वैश्य नागचन्द्र नाम का वैश्य रहता था। वह मदाली के साथ कुकर्म करने लगा।" राजा द्वारा इसी अपराध का वह दंड में दिया गया था।

यह सुनकर नागश्री ने अपने पिता द्वारा कलंक रहित, जगत्पूज्य व जिसके बिना अनाचारियों को दु:ख भोगने पड़ते हैं – ऐसे शीलव्रत के छुड़ाए जाने पर प्रश्नचिह्न लगाया। एकदेश शीलव्रत विवाह आदि का प्रतिबंधक नहीं है, इसलिए उसने इस व्रत को भी रखने की स्वीकृति दे दी।

कुछ दूरी पर कुछ सिपाही एक वीरपूर्ण नाम के मनुष्य को बाँधकर मारते–मारते ले जा रहे थे। वह महान लोभी था, सदा दूध का ही भोजन करता था और राजा की अश्वशाला का रखवाला था।

एक दिन अश्वशाला में घुस आए गाय, भैंसों को पकड़कर राजा के पास ले गया तो राजा ने सभी पशु उसे ही दे दिए। लोभ के वश उसने गाँव की सारी अच्छी गाय–बैल, यहाँ तक कि रानी की गाय–भैंसें भी ले लीं, जिससे रानी ने क्रोधित होकर राजा को वास्तविकता सुनाई तथा राजा ने उसे शीघ्र भारी दण्ड देने की आज्ञा दे दी। तब नागश्री अपने पिताजी से बोली कि "जब अति परिग्रह के लोभ से ऐसे बंधन, मारन, ताड़न और प्राणों का हरण जैसे महादु:ख सहने पड़ते हैं, तो उसने मुनिराज से जो परिग्रह–परिमाणव्रत लिया है, उसको पालना तो हितकर ही है, वह उसे मरणपर्यंत नहीं छोड़ेगी।" पुत्री की दृढ़ता तथा व्रतों की सत्यता तथा प्रत्यक्ष लाभ देखते हुए नागशर्मा ने नागश्री को यह व्रत रख भी रख लेने की स्वीकृति दे दी।

लोक में कहावत है कि भावना से भवन बनता है। नागश्री की भावना तो व्रतों को उत्तम प्रकार से पालने की थी। उसे प्राणों को छोड़ना तो मंजूर था मगर व्रतों को छोड़ना तो दूर, उनमें अतिचार (छोटा भी दोष) लगाना भी बर्दाश्त नहीं था। अत: बुद्धिमान जीवों को चाहिये कि वे अव्रतों के दोषों का और व्रतों के गुणों का विचार कर अव्रत दशा को छोड़कर व्रतों को धारण करें।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 - निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. लोक में क्या कहावत है?
2. नागश्री ने किनसे पंचाणुव्रत लिये थे?
3. नागश्री के पिता का नाम क्या था?
4. देवदत्त साहूकार कितने दीनार के मालिक थे?
5. पंचाणुव्रत के नाम बताइये।

प्रश्न 2 - रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. अठारह करोड़ दीनार का मालिक .... में रहता था।
2. महान लोभी .... था।
3. हमें .... दशा को छोड़ना चाहिए।
4. .... के त्यागरूप अचौर्याणुव्रत होता है।
5. नाग शर्मा की पुत्री .... थी।

प्रश्न 3 - पाठ से आगे -

आप उन कामों की लिस्ट बनाइए और विचार कीजिए जिन्हें आप पाप मानते हैं।

10 जीवन निहारें-जीवन निखारें

छोड़ो हताशा/निराशा - रखो सफलता की आशा

"जिनके पास स्नेह एवं सेवा मनोभावरूपी दो मजबूत पंख हैं, वे जीवन की उन्नति पाते हैं।"

"Those who have two strong wings of affection and service, they get progress in their life." – अज्ञात

यह मनुष्य जीवन हमें बहुत ही दुर्लभता से प्राप्त हुआ है। इस जीवन में हमें श्रेष्ठ लौकिक और लोकोत्तर लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करना ही चाहिए; परन्तु हम नकारात्मक सोच, हताशा, निराशा से घिरकर अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं। इसीलिए कवि ने कहा है – 'नर हो न निराश करो मन को।'

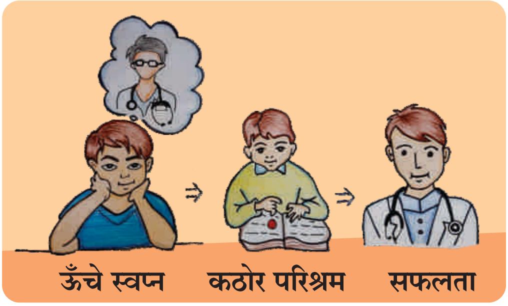

चाहे लौकिक मार्ग हो या लोकोत्तर मार्ग, यदि हमारे विचारों में ऊर्जा है, उत्साह है, कुछ कर गुजरने की तमन्ना है, ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने की भावना व प्रयास है तो निश्चित ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

'हम देखा-देखी व दिखावे के लिए अपना जीवन समर्पित न करें' दुनियाँ में 90 प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो अपने हृदय में कोई उमंग लेकर नहीं चलते हैं, वह किसी भी प्रकार की जोखिम लेने के लिए तैयार नहीं होते हैं, जो चल रहा है उसमें परिवर्तन करने के लिए उनका साहस नहीं होता, इसीलिए न वे लौकिक मार्ग में उन्नति कर पाते हैं और न ही पारंपरिक धार्मिक/आध्यात्मिक विचारधारा में परिवर्तन कर पाते हैं, जिसके कारण वे आगे नहीं बढ़ पाते हैं, अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते, फलतः निराश/हताश हो जाते हैं।

कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु हमें अपने उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ध्यान रखना आवश्यक हैं –

1. निरंतर कठोर परिश्रम, सकारात्मक सोच, ऊँचे स्वप्न व पवित्र संकल्पों से ही व्यक्ति महानता के शिखर पर पहुँचता है।

जो व्यक्ति परिश्रम से नहीं डरता, परिश्रम को अपनी पूँजी समझता है, हमेशा ही 'कार्य हो करके ही रहेगा' ऐसी जिसकी सोच है, जिसने उन्नत शिखर पर पहुँचना अपना लक्ष्य निर्धारित किया है और पवित्रसंकल्प मन में है कि 'मैं अपने शुद्धसाधनों के द्वारा शुद्ध लक्ष्य को प्राप्त कर लूँगा', जिसके हृदय में किसी को नीचे गिराने–हराने–दु:खी करने की भावना नहीं है, वह इस पवित्र संकल्प से उन्नति के शिखर पर पहुँचता है।

इन गुणों से संयुक्त व्यक्ति चाहे राजनीति में हो, व्यापार में हो, किसी सेवा में हो अथवा धर्म प्राप्ति के मार्ग में हो वह निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा। जो उद्यमी पुरुष होते हैं, भाग्य भी उनका ही साथ देता है; क्योंकि कोई भी कार्य होने में पाँच कारण मुख्य होते हैं – स्वभाव, पुरुषार्थ, काललब्धि, भवितव्यता (होनहार) और निमित्त (बाह्य कारण)। जिसका जिस दिशा में सहज उग्र पुरुषार्थ चल रहा है, इसका अर्थ है कि उसकी काललब्धि व भवितव्यता भी वही होने वाली है, निमित्त भी अनुकूल मिलेंगे हीमिलेंगे।

2. व्यक्ति बड़े घर में पैदा होकर नहीं, अपितु अपने पुरुषार्थ, संघर्ष, समर्पण, स्वाभिमान एवं कर्म से महान बनता है।

हमारे देश में अनेक महापुरुष हुए हैं, जिनको हम आज भी ससम्मान याद करते हैं – महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, डॉक्टर अंबेडकर, हमारे राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. अब्दुल कलाम आजाद ये सभी वे नाम हैं, जिन्होंने अपने पुरुषार्थ, संघर्ष, समर्पण व स्वाभिमान से भारत के रत्न के रूप में अपने आपको स्थापित किया है।

लोकोत्तर मार्ग में भी जिन्होंने सामान्य परिवारों में भी जन्म लिया उन्होंने भी सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्राप्त कर 100-100 इंद्र जिनको नमन करें - ऐसे तीर्थंकर और गणधरदेव जैसे पद प्राप्त किए। वर्तमान में भी अनेक त्यागी, विद्वान, लेखक, प्रचारक ऐसे हैं, जिन्होंने किसी बड़े खानदानी परिवार में जन्म नहीं लिया, जिनके परिवार में कोई विद्वान नहीं हुए, लेकिन उन्होंने अपने परिश्रम से योग्यता अर्जित कर समाज को दिशा-निर्देशन किया जैसे श्री गणेश-प्रसादजी वर्णी, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी आदि।

3. सपनों को हकीकत में बदलने के लिए निरंतर कठोर परिश्रम करना पड़ता है।

अच्छे सपने देखना बहुत अच्छी बात है, लेकिन सपने ही देखते रहना अपने जीवन को अंधकार में ले जाने जैसा है। हमने जो सपने देखे हैं, उनको सार्थक करने हेतु कठोर परिश्रम करने के लिए भी हमें सदैव उत्साहपूर्वक तैयार रहना चाहिए। सुभाषितकार ने कहा है -

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

उद्यम/परिश्रम से ही कार्यसिद्ध होते हैं, मात्र कल्पना करने, सपना देखने से कार्य सिद्ध नहीं होते। जो जंगल का राजा सिंह है, उसके मुँह में भी स्वयं चलकर हिरण आदि पशु नहीं आते। सिंह को भी अपने भोजन के लिए परिश्रम करना होता है।

मित्रो! मेहनत से न डरें। जो परिश्रम करने से डर गया, समझो लक्ष्य पाने से पहले ही मर गया। यदि लक्ष्य ऊँचा बनाया है तो उस उन्नत शिखर पर चढ़ने के लिए हमारे फेफड़ों में श्वांस भरने की भी पूरी क्षमता होनी ही चाहिए, तभी हम उस उन्नत शिखर पर पहुँच सकते हैं।

जिन विद्यार्थियों ने बोर्ड या विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, वह किसी भाग्य के भरोसे या आशीर्वाद से नहीं बल्कि कठोर परिश्रम से ही प्राप्त किया है।

माननीय मोदीजी जो अभी यशस्वी प्रधानमंत्री हैं, उन्होंने यह पद किसी के द्वारा दिया हुआ प्राप्त नहीं किया है, बल्कि अपने परिश्रम-लगन व समर्पण के बलबूते पर प्राप्त किया है।

जो उद्योग में देश में प्रथम स्थान पर है ऐसे अंबानी परिवार, अडानी परिवार वह भी अपनी निरंतर की सक्रियता व परिश्रम के कारण उन स्थानों तक पहुँचे हैं।

जो प्रशासनिक सेवाओं में चयनित होते हैं, वह किसी की आरती उतारने या नारियल फोड़ने के कारण से नहीं, अपितु रात-दिन के परिश्रम से उस पद को प्राप्त करते हैं।

मित्रो! परिश्रम का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। यदि कुछ बनना है, कुछ पाना है तो परिश्रम करना ही होगा। जैसा लक्ष्य, वैसा परिश्रम/वैसा ही पुरुषार्थ हमारा हो तो मंजिल तो आपके कदमों के नीचे होगी।

आप यदि मोक्षमार्ग में चलना चाहते हैं तो भी आपको परिश्रम करना होगा पर परिश्रम का स्वरूप अलग होगा। बाह्य उन्नति के लिए परिश्रम फैलना है, तो मोक्षमार्ग में सिमटना है। पर से हटकर अपने नजदीक आना यही पुरुषार्थ है। कुछ नहीं करना, मात्र ज्ञाता-दृष्टा रहना ही पुरुषार्थ है। सच में यही पुरुषार्थ है, अन्य जो कहा जाता है वह तो प्रेरणा मात्र है।

मोक्षमार्ग की प्राप्ति का प्रारंभिक उपाय तत्त्वज्ञान/तत्त्व विचार है। तत्त्वज्ञान/तत्त्वप्रचार के लिए पूरा समर्पण अत्यावश्यक है। "जब तक जिस प्रकार पर्याय में अपनत्व बुद्धि है, उसी प्रकार आत्मा में अपनत्वबुद्धि न आ जाए, तब तक हमें तत्त्व विचार करते रहना चाहिए - यही हमारा पुरुषार्थ है।"

ऐसा पुरुषार्थ/उद्यम करते हुए भी यदि कार्य की सिद्धि नहीं होती है तो नीतिकार कहते हैं – **'यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः?'**

इस सूक्ति के दो प्रकार से अर्थ किए जाते हैं –

1. यत्न अर्थात् परिश्रम, पुरुषार्थ करने पर भी यदि कार्य सिद्ध नहीं हुआ है तो इसमें हमारा क्या दोष है? अर्थात् हमारा कोई दोष नहीं है। शायद हमारी पर्याय में अभी वह कार्य होने की योग्यता ही नहीं है।

जैसे विद्यार्थी विद्यालय जाता है, गृहकार्य करता है, याद करता है, पढ़ाई करता है फिर भी प्रथम स्थान को प्राप्त नहीं कर पाता या व्यापारी प्रतिदिन नियमित समय पर बाजार जाता है, दुकान खोलता है, ग्राहकों से योग्य व्यवहार करता है, फिर भी वांछित लाभ नहीं होता है, राजनेता चुनाव में खड़ा होता है मतदाताओं से सब व्यवहार करता है, जनसंपर्क करता है; फिर भी यदि विजेता नहीं होता है, तब यही कहा जाएगा कि अब हम और क्या करें? हमारी प्रथम स्थान आने या धन लाभ प्राप्त करने या चुनाव में जीतने की योग्यता, होनहार, भवितव्यता ही नहीं थी।

हम आगमानुसार तत्त्वविचार कर रहे हैं, स्वाध्याय करते हैं, चिंतन करते हैं; पर सम्यग्दर्शन नहीं हुआ तो अब हमारा इसमें क्या दोष है, हम और क्या कर सकते हैं? अभी हमारी श्रद्धा गुण की पर्याय के निर्मल होने की काललब्धि नहीं आयी है, यही विचार करना चाहिए।

2. इसी का दूसरा अर्थ मनीषी करते हैं कि – इतना यत्न करने पर भी यदि कार्य की सिद्धि नहीं हुई तो विचार करना चाहिए कि अभी इसमें और क्या दोष? क्या कमी रह गई है?

क्यों?

क्योंकि यदि पूरा कारण हमने दिया होता तो कार्य होना ही चाहिए। 'सच्चा/पूरा कारण मिल जाए और कार्य न हो ऐसा हो ही नहीं सकता।' निश्चित ही हमारे कार्य करने में कुछ दोष रह गया, कोई कमी रह गई है, उसका अनुशीलन हमें गुरुजनों के पास जाकर अर्थात् जो जिस क्षेत्र के

विशेषज्ञ हैं, उनके नजदीक जाकर; अपनी कार्यपद्धति बतलाते हुए, उसमें क्या दोष रह गया है, यह जानने/समझने का पुरुषार्थ करना चाहिए; वे निश्चित ही हमारी चिंतनधारा, हमारी कार्यपद्धति को देखकर समझेंगे और बताएँगे कि हमारे कार्य करने अथवा समझने में कहाँ क्या दोष है। यही हमारी उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ने की कला है।

3. 'भोग-विलास एवं मौजमस्ती जीवन का उद्देश्य नहीं, अपितु चरित्रवान/बलवान एवं विद्वान बनकर अपने समाज व देश के लिए कुछ करके जाना यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।'

वर्तमान में सभी की मानसिकता भोग प्रधान होती जा रही है। कैसे भी भोग सामग्री प्राप्त करना? मेहनत करके पैसा कमाना और मौजमस्ती के कार्यों में उस पैसे को उड़ाना। हमारी यही सोच रहती है। आज जितने भी उत्पादन हैं, वे तन-मन-धन व धर्म को नष्ट करने वाले हैं, परन्तुउनकी पैकिंग का आकर्षण इतना जबरदस्त होता है, उनका विज्ञापन इतना मनमोहक होता है कि जिसे देखकर हम सब उन वस्तुओं का उपयोग करना चाहते हैं। चाहे वे खाने-पीने, पहनने, घूमने-फिरने, शृंगार आदिके साधन हों उनकी प्राप्ति में ही हम अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं।

जो भोग, विलास वर्तमान में तन-मन-धन को बिगाड़ने वाले हैं एवं पाप का कारण होने से अनंत भविष्य को बिगाड़ने वाले हैं, हम उनसे बचने एवं अपने उन्नत चरित्र का निर्माण करने की मानसिकता के साथ जीवन जियें।

मित्रो! हमारे जीवन का उद्देश्य मौजमस्ती नहीं, बल्कि एक बलवान/चरित्रवान/सुयोग्य नागरिक बनना है और इसके लिए सत्साहित्य का अध्येता बनना आवश्यक है। सुभाषितकार ने कहा भी है -

"राष्ट्रं समाजतः सिद्ध्येत् समाजो व्यक्तिभिस्तथा।
व्यक्तिः चरित्रतः सिद्ध्येत् चरित्रं तूच्चशिक्षया॥"

"राष्ट्र का निर्माण समाज से, समाज का निर्माण व्यक्ति से, व्यक्ति का निर्माण चरित्र से और चरित्र का निर्माण उच्च शिक्षा से होता है।"

उच्च शिक्षा का अर्थ डिग्रियाँ नहीं है, उच्च शिक्षा का अर्थ जो हमारे चरित्र का निर्माण करे, जो देश व समाज के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करे, जो अपने पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन करने के लिए प्रेरित करे और जो धर्म के मार्ग पर चलते हुए आत्मोन्नति करने के लिए प्रेरित करे वही उच्च शिक्षा है।

4. 'कभी भी निराश, हताश, उदास नहीं होना चाहिए; क्योंकि हारने वाला व्यक्ति ही जीतता है, प्रतिकूलता से ही प्रतिभा उभरती है, अंधेरे के बाद ही प्रकाश होता है, पतझड़ के बाद ही बसंत का आगमन होता है।'

हम जो भी कार्य करते हैं, उसमें असफल होना भी एक सहज प्रक्रिया है। हम वाहन चलाते हैं, उस समय दुर्घटना हो सकती है; व्यापार में घाटा लग सकता है; नौकरी करते हैं तो हमारी नापसंद जगह पर ट्रांसफर हो सकता है; परिवार में रहते हैं तो मतभेद हो सकते हैं; विद्यार्थी परीक्षा देता है तो असफल हो सकता है; किसी भी खेलकूद या मानसिक प्रतियोगिता में असफल हो सकता है; ऐसा होना ही चाहिए ऐसा नियम नहीं है; परंतु यह सब कार्य करते हुए यह सब हो सकता है अतः हम इन असफलताओं से घबराएँ नहीं, निराश न हों, हताश न हों कि अब मेरे द्वारा कुछ नहीं हो सकता। कवि नीरज लिखते हैं –

'कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।'

- चींटी 100 बार दीवाल पर चढ़ती है, फिसलती है, गिरती है, लेकिन अंततः वह ऊपर पहुँच ही जाती है।
- मोहम्मद गौरी 17 बार पराजित होने के बाद भी प्रयास नहीं छोड़ता और जीत जाता है।
- हर व्यापारी पहली बार में ही सफल हो जाता हो – ऐसा नहीं है।
- आईआईटी या भारतीय प्रशासनिक सेवा में भी एक बार में ही सभी निकल जाते हैं – ऐसा नहीं है।
- लेकिन जो प्रयास करते रहते हैं, वे अवश्य ही सफल होते हैं।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – अति लघूत्तरीय प्रश्न –

1. यह मनुष्य जीवन हमें कैसे प्राप्त हुआ है?
2. पाठ में कितने प्रकार के मार्ग बताए हैं, नाम सहित बताइए।
3. कार्य के होने में पाँच प्रमुख कारण कौन–कौन से हैं?
4. कार्य की सिद्धि कैसे होती है?
5. लक्षण की पहिचान होते ही किसकी प्राप्ति होती है?

प्रश्न 2 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. उच्च लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हमें कौन–कौन से महत्त्वपूर्ण बिन्दु ध्यान रखना चाहिए?
2. लौकिक एवं लोकोत्तर मार्ग में महान कार्य करने वाले पाँच–पाँच महापुरुषों के नाम लिखिए।
3. मोक्षमार्ग की प्राप्ति का उपाय सविस्तार बताइए।

प्रश्न 3 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. .... हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
2. यत्ने कृते न .... कोऽत्र दोषः।
3. व्यक्तिः .... सिद्ध्येत्? चरित्रं तूच्चशिक्षया।
4. कुछ सपनों के मर जाने से .... नहीं मरा करता है।
5. लक्षण और लक्ष्य .... नहीं है।

प्रश्न 4 – सही जोड़ी बनाइए –

1.	जीवन निहारें	क.	ज्ञाता–दृष्टा
2.	इन्द्र	ख.	कार्य
3.	सच्चा पुरुषार्थ	ग.	चरित्र निर्माण
4.	कारण	घ.	100
5.	उच्च शिक्षा	ङ.	जीवन निखारें

11 शिक्षाप्रद कहानी

अपशकुन

"चलो जल्दी करो, लेट हो गये हैं। ट्रेन निकल जायेगी..." मति अपने भाई को जोर से डाँटते हुए बोली।

"दीदी! मैं तो तैयार हूँ, ऑटोरिक्शा वाला भाई भी आ गया है। आप ही लेट कर रही हो" – समय ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"हाँ हाँ पता है, सब गलती मेरी ही है। तुम्हारे लिए ही नाश्ता पैक कर रही थी। चलो! मैं तो बाहर आ गई।"

"हाँ हाँ समय अब चलो।" मति सूटकेस बाहर लाते हुए बोली।

बाहर ऑटो वाला भी हार्न बजाकर जल्दी चलने के लिए कह रहा था। मति और समय ऑटो में बैठ गये और जैसे ही ऑटो आगे बढ़ा, थोड़ा आगे जाने पर मति ने तेज स्वर में कहा – "ऑटो रोको।"

"क्या हुआ मैडम? कुछ सामान भूल गई हैं क्या?" ऑटो वाले ने रुकते हुए पूछा।

"नहीं भैया! आपने देखा नहीं सामने से एक बिल्ली ने रास्ता काटा है।"

"तो क्या हुआ? ऐसे तो बिल्ली रोज ही मेरी ऑटो के सामने से निकलती है। यदि बार-बार ऑटो रोकता रहूँगा तो मैं तो भूखा ही मर जाऊँगा।"

"अरे भैया! आप नहीं समझते, शास्त्रों में लिखा है कि बिल्ली के रास्ता काटने से अपशकुन होता है, कोई बुरी घटना हो सकती है।"

"देखो मैडम! आप पढ़ी-लिखी समझदार होकर भी ऐसी बातें कर रहीं हैं। मुझे बताइये कौन से शास्त्र में ऐसा लिखा है?" ऑटो वाले ने पंडितों की शैली में कहा।

"वो मैं कुछ नहीं जानती बस आप दो मिनिट रुकिये फिर चलेंगे।"

"लेकिन दीदी..."

"तू चुप रह समय। मैंने जो कह दिया सो कह दिया।"

मति की जिद देखकर ऑटो वाला भी रुक गया। तब तक सामने ट्रैफिक जाम हो गया और बड़ी मुश्किल से ऑटो बाहर निकल पाया।

ट्रेन का समय भी हो रहा था। जैसे-तैसे वे रेलवे स्टेशन पहुँचे और ऑटो वाले को किराया देकर मति और समय भागते-भागते प्लेटफार्म पर पहुँचे तो उन्हें उनकी ट्रेन जाती हुई दिखाई दे रही थी। लेकिन अब क्या कर सकते थे..वापिस दोनों अपने घर आ गये। रास्ते में वे दोनों चुपचाप रहे। घर पर आकर समय ने मति के पास आकर कहा - "दीदी! कोई बात नहीं, ये तो चलता ही रहता है। मुझे दुःख इस बात का नहीं है कि हमारी ट्रेन छूट गई, दुःख इस बात का है कि आपने कैसी उल्टी मान्यता मान रखी है। अब मुझे बताइये बिल्ली के रास्ता काटने के बाद रुकने पर अपशकुन हुआ या नहीं? ये सब बेकार की बातें हैं। कोई अपनी दुकान में नींबू-मिर्च लगाता है, कोई दुकान में धुँआ करता है, काँच के फूट जाने, छींक आने, कौए के बोलने पर अच्छा-बुरा मानते हैं। ये सब तो अंधविश्वास है और महापाप है। हमने तो पाठशाला में यही पढ़ा है।"

"लेकिन समय! दुनिया में तो अनेक लोग ऐसा करते हैं" - मति ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा।

समय ने समझदारी से कहा - "दीदी! यदि 100 लोग मिलकर कोई गलत कार्य करें तो वह कार्य सही नहीं हो जाता। किसी का भला-बुरा होना तो उसके पुण्य-पाप के उदय के अनुसार होता है और ये खोटी मान्यताएँ तो हमारे भारत में अधिक हैं, कई देशों में तो ऐसी मान्यताएँ हैं ही नहीं हैं और कई देशों में तो बिल्ली का रास्ता काटना, छींक आना शुभ माना जाता है। हमें इन सब बातों में अपना समय और ज्ञान बर्बाद नहीं करना चाहिए।"

"बात तो तुम सही कह रहे हो। यदि आज मैंने ऑटो नहीं रुकवाया होता तो हमारी ट्रेन नहीं छूटती।" मति ने शांत स्वर से कहा - "तुमने ये सब बातें पाठशाला में सीखी हैं ना?"

"हाँ दीदी! यह सब हमारी पाठशाला का कमाल है। अनंत तीर्थंकरों और मुनिराजों ने अपने निर्मल ज्ञान से वस्तु स्वरूप का जो वर्णन किया वही हमें वहाँ बताया जाता है।"

"तब तो मैं भी अब पाठशाला चलूँगी।" मति ने उत्साहित होकर कहा।

"वाह दीदी! अच्छा हुआ जो हमारी ट्रेन छूट गई, आपकी ट्रेन तो पटरी पर आ गई।" समय की बात का अर्थ समझ कर मति ने मुस्कराते हुए अपने छोटे भाई को गले से लगा लिया।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. भला-बुरा किसके अनुसार होता है?
2. मति ने तेज स्वर में ऑटो रोकने को क्यों बोला?
3. ऑटो रोकने के परिणामस्वरूप क्या हुआ?
4. मिथ्यात्व और महापाप क्या है?
5. हमें किन-किन बातों में अपना ज्ञान बर्बाद नहीं करना चाहिए?

प्रश्न 2 – पात्र का नाम बताओ –

1. सूटकेस बाहर कौन लाया?
2. मति ने किसको चुप रहने कहा?
3. 'भला-बुरा होना पुण्य-पाप के उदय के अनुसार है'- यह किसने कहा?
4. 'आपकी ट्रेन तो पटरी पर आ गई' किसने कहा?
5. 'मैं भूखा ही मर जाऊँगा' किसने कहा?

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

अपने आसपास चलने वाली मान्यताओं के बारे में विचार करिए और शिक्षकों से चर्चा करिए।

12 सुभाषित : ज्ञान और ज्ञान का फल

ज्ञानतृष्णा गुरौ निष्ठा सदाध्ययनशीलता।
एकाग्रता महत्त्वेच्छा विद्यार्थी पंचलक्षणम्।।

ज्ञान प्राप्ति की तृष्णा, अपने गुरुओं के प्रति निष्ठा, निरन्तर अध्ययन करने का स्वभाव, अध्ययन में एकाग्रता और निरन्तर आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा – ये विद्यार्थी के पाँच लक्षण कहे गए हैं।

वाचनं श्रवणं भक्तया, स्मरणं पृच्छनं पुनः।
लेखनं पाठनञ्चापि, षट्कर्माणि दिने दिने।।

भक्ति पूर्वक पढ़ना, सुनना, याद करना, बार-बार पूछना, लिखना और पढ़ाना – ये छह कार्य विद्यार्थी को प्रतिदिन करना चाहिए।

परं ज्ञानफलं वृत्तं न विभूतिर्गरीयसी।
तथा हि वर्धते कर्म सद्वृत्तेन विमुच्यते।।

ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ फल चारित्र का होना है, वैभव या विभूति की प्राप्ति होना नहीं। विभूति से तो कर्म बँधते हैं जबकि सदाचरण से जीव मुक्त होते हैं।

येनात्मा बुध्यते तत्त्वं मनो येन निरुध्यते।
पापाद्विमुच्यते येन तज्ज्ञानं, ज्ञानिनो विदुः।।

जिससे आत्मतत्त्व अर्थात् सच्चे वस्तु स्वरूप को जानता है, जिसमें मन रुक जाता है और जिससे जीव पाप से मुक्त होता है ज्ञानी पुरुष उसे ज्ञान जानते हैं।

ज्ञानं तृतीयं पुरुषस्य नेत्रं, समस्ततत्त्वार्थ-विलोकदक्षम्।
तेजोऽनपेक्षं विगतान्तरायं, प्रवृत्तिमत् सर्वजगत्त्रयेऽपि।।

पुरुष का ज्ञान रूपी तीसरा नेत्र समस्त तत्त्वार्थों के देखने में समर्थ है, प्रकाश आदि अन्य तेजस्वी पदार्थों की अपेक्षा से रहित है, अंतराय-विघ्न/बाधाओं से रहित है और संपूर्ण तीनों लोकों में भी प्रवृत्त है – वहाँ की बात को जानने वाला है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – अति लघूत्तरीय प्रश्न –

1. विद्यार्थी के कितने लक्षण कहे गए हैं?
2. विद्यार्थी को प्रतिदिन कितने कार्य करने चाहिए?
3. जीव मुक्त किससे होता है?
4. पुरुष का तीसरा नेत्र कौनसा है?
5. ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ फल क्या है?

प्रश्न 2 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. विद्यार्थी के पाँच लक्षण कौन–कौन से हैं? नाम सहित बताइये।
2. विद्यार्थी को प्रतिदिन कितने कार्य करने चाहिए? नाम सहित बताइये।
3. ज्ञानी पुरुष ज्ञान किसे कहते हैं?

प्रश्न 3 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. ज्ञानतृष्णा गुरौ निष्ठा .... शीलता।
2. वाचनं श्रवणं भक्त्या .... पृच्छनं पुनः।
3. ज्ञानं तृतीयं .... समस्ततत्त्वार्थ–विलोकदक्षम्।

प्रश्न 4 – सही–गलत पहचानिए –

1. वैभव या विभूति की प्राप्ति ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ फल है।
2. जिससे जीव पाप से मुक्त होता है, ज्ञानी पुरुष उसे ज्ञान कहते हैं।
3. ज्ञान प्राप्ति की तृष्णा विद्यार्थी का लक्षण है।

प्रश्न 5 – सही जोड़ी बनाइए –

1.	विद्यार्थी के लक्षण	क.	जीव मुक्त
2.	विद्यार्थी के कार्य	ख.	सर्वश्रेष्ठ फल चारित्र
3.	तीसरा नेत्र	ग.	पाँच
4.	ज्ञान	घ.	छह
5.	सदाचरण	ङ.	ज्ञान

प्यारे बच्चो !!

आप अपने प्यारे-प्यारे जन्मदिन पर -

- अपने निर्दोष परमात्मा/इष्टदेव का दर्शन/स्मरण करो।
- अपने दादा-दादी, नाना नानी, माता-पिता और अन्य बड़े जनों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- विद्यालय में गुरुजनों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- अपने मित्रों के बीच फल, नारियल चटक, मिश्री वितरण करके शुभकामनाएँ प्राप्त करो।
- मन्दिर में दान करो।
- बालक-बालिकाओं को कॉपी-पेन आदि उपहार में देकर शुभकामनाएँ प्राप्त करो।

जन्मदिन के अवसर पर -

- मोमबत्ती जलाकर बुझाने का काम मत करो।
- बाजार में बने हुए केमिकल युक्त नुकसानदायक केक काटकर खाना-खिलाना मत करो।
- माता-पिता पर दबाव डालकर उपहार लेना, पैसा माँग कर मित्रों के बीच तन-मन-धन बिगाड़ने वाली पार्टी आदि मत करो।

आपके जन्मदिन के अवसर पर 'धरोहर' परिवार की मंगल शुभकामनाएँ हैं कि आप अपनी भारतीय संस्कृति रूप धरोहर को अच्छी तरह संभालें।

आपका जीवन मंगलमय होगा।

अनुशासन के सूत्र

- प्रत्येक कार्य समय पर करना चाहिए।
- प्रत्येक वस्तु को नियत स्थान पर रखना चाहिए।
- गुरुजनों को ज्ञात कराये बिना, कोई नवीन कार्य न करना चाहिए।
- भूल को सहजता से स्वीकार करना चाहिए।
- अपने लक्ष्य को प्रतिदिन दोहराना चाहिए।
- गुरुजनों के वचनों का आदर करते हुए अपने वचनों का निर्वाह करना चाहिए।

धरोहर